ओ३म्

सत्यार्थ-सौरभ

सितम्बर-२०१२

सितम्बर-2012 ◆ वर्ष 1 ◆ अंक 4 ◆ उदयपुर

सौरभ बिखरा
दिग्दिगन्त में
नील गगन घन में

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १० ६

माथे की बिंदी है ये हिंदी

संस्कृत की एक लाड़ली बेटी है ये हिन्दी।
बहनों को साथ लेकर चलती है ये हिन्दी।
सुंदर है, मनोरम है, मीठी है, सरल है,
ओजस्विनी है और अनूठी है ये हिन्दी।
पाथेय है, प्रवास में, परिचय का सूत्र है,
मैत्री को जोड़ने की साँकल है ये हिन्दी।
पढ़ने व पढ़ाने में सहज है, ये सुगम है,
साहित्य का असीम सागर है ये हिन्दी।
तुलसी, कबीर, मीरा ने इसमें ही लिखा है,
कवि सूर के सागर की गागर है ये हिन्दी।
वागेश्वरी का माथे पर वरदहस्त है,
निश्चय ही वंदनीय माँ–सम है ये हिंदी।
अंग्रेजी से भी इसका कोई बैर नहीं है,
उसको भी अपनेपन से लुभाती है ये हिन्दी।
यूँ तो देश में कई भाषाएँ और हैं,
पर राष्ट्र के माथे की बिंदी है ये हिन्दी।

– मृणालिनी धुले

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ - सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ-सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)

डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक

आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय

डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री

डॉ.सोमदेव शास्त्री

डॉ. रघुवीर वेदालंकार

आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

संपादक

अशोक आर्य

कम्पयूटर एवं ग्राफिक्स

संदीप यादव

सहयोग ◆ भारत	विदेश
संरक्षक - ११००० रु.	$ 1000
आजीवन - १००० रु.	$ 250
पंचवर्षीय - ४०० रु.	$ 100
वार्षिक - १०० रु.	$ 25
एक प्रति - १० रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, उदयपुर खाता संख्या : ३१०१०२०१००४१५१८ IFSC CODE- UBIN 0531014 में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३११३
(द्वि.) भाद्रपद कृष्ण सप्तमी
विक्रम संवत्
२०६९
दयानन्दाब्द
१८८

September - 2012

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर २ व ३ (भीतरी आवरण) रंगीन ३५०० रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	२००० रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	१००० रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	७५० रु.

२३ राष्ट्रभाषा

१० वैदिक धर्म तत्त्व

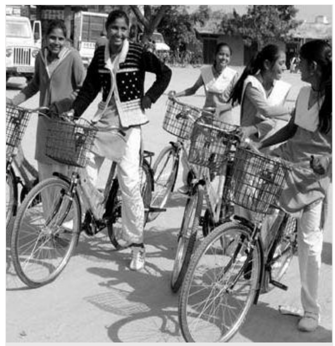

स्त्री शिक्षा का प्रणेता आर्य समाज १२

१९ सूचना तकनीक के नवाचार

समाचार २५

हलचल २६

०४ वेद सुधा

०८ आधा अधूरा प्रयास

१७ वेदों में चिकित्सा विज्ञान

२२ महर्षि का ओषधि पत्र

२७ सत्यार्थ प्रकाश के अनुवाद

२९ Vedas ..... Make Life Meaningful

स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक	श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर	वर्ष - १ अंक - ४	द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर	मुद्रण

प्रकाशक

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास

नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१

(०२९४) २४१७६९४ , ९३१४५३५३७९, ९८२८९२९७४७

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक आर्य

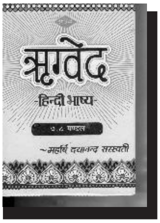

ओ३म्

वेद सुधा

ईर्ष्या-विनाश

ईर्ष्याया-ध्राजिं प्रथमां प्रथमस्या उतापराम्। अग्निं हृदय्यं१शोकं तं ते निर्वापयामसि।।
यथा भूमिर्मृतमना मृतान्मृतमनस्तरा। यथोत मम्रुषो मन एवेर्ष्योर्मृतं मनः।।
अदो यते हृदि श्रितं मनस्कं पतयिष्णुकम्। ततस्त ईर्ष्यां मुञ्चामि निरूष्माणं दृतेरिव।। -अथर्व. ६/१८/१-३

शब्दार्थ-ईर्ष्यायाः- ईर्ष्या के प्रथमाम्-पहले ध्राजिम् उत-वेग को और प्रथमस्याः- पहले के (बाद होने वाले) अपराम्-दूसरे अर्थात् ईर्ष्या के फलस्वरूप हृदय्यम्- हृदय में होने वाले ते शोकम्- तेरे शोकरूप तम् अग्निम्-उस अग्नि को निर्वापयामसि-हम बुझाते हैं। यथा भूमिः-जैसे भूमि मृतमनाः-मृतक के मरे मन के समान है, मृतात्-(और) मुरदे से (भी) मृतमनस्तरा-अधिक मुर्दादिल है यथा मम्रुषः-(और) मरने वाले का मनः-मन (होता है) एवा ईर्ष्योः- इस प्रकार ईर्ष्या करने वाले का मनः मृतम्-मन मुरदा होता है। अदः यत्-यह जो ते हृदि-तेरे हृदय में कम्-सुखाभास देने वाला (किन्तु) पतयिष्णु-पतनशील, गिरनेवाला मनस्कम्-तुच्छ मन, मनोभाव श्रितम्-रह रहा है, ततः ते-यहाँ से तेरी ईर्ष्याम्-ईर्ष्या को मुञ्चामि-छुड़ाता हूँ, दूर करता हूँ इव दृतेः-जैसे धौंकनी से ऊष्माणम् निः-गरमी को निकालता हूँ।

व्याख्या- दूसरे की उन्नति देखकर और स्वयं वैसा करने में अपने को असमर्थ पाकर उस उन्नत पुरुष के प्रति हृदय में जो जलन पैदा होती है उसे ईर्ष्या कहते हैं।

इन तीनों मन्त्रों में ईर्ष्या की उत्पत्ति, फल तथा ईर्ष्या करने वाले की मानसिक दशा का बहुत ही सुन्दर वर्णन किया गया है। पहले मन्त्र में ईर्ष्या के दो वेग बताये गये हैं। पहला तब पैदा होता है, जब मनुष्य अपने से किसी उन्नत, उत्कृष्ट को देखता है, उससे उसके अन्दर एक आश्चर्य-भावना उत्पन्न होती है। अगले क्षण में अपने को वैसा बनाने में अशक्त अनुभव कर जलन के भाव उसमें पैदा होते हैं, यह ईर्ष्या का दूसरा वेग है। इस शोक और दाह से दूसरे को हानि नहीं होती, वरन् अपना हृदय जलता है।

यों समझिए कि किसी पर हम कीचड़ फेंकना चाहते हैं तो उसके लिए पहले हमें कीचड़ उठाना होगा, अर्थात् अपने हाथों में कीचड़ लगाना होगा। इसी तरह ईर्ष्या के कारण दूसरे को हानि पहुँचाने से पूर्व हमें स्वयं अपने हृदय को जलाना होगा। जिस प्रकार दूसरे पर कीचड़ फेंकते हुए अपने ऊपर भी कीचड़ पड़ जाता है, उसी भाँति ईर्ष्या के वश दूसरे पर क्रोध करते हुए या गाली आदि देते हुए अपनी जिह्व या मुख मलिन करने होते हैं, अर्थात् ईर्ष्या का मुख्य कुफल ईर्ष्यालु-ईर्ष्या करने वाले को भोगना पड़ता है। ईर्ष्या एक ऐसी आग है, जो पहले प्रदीप्त करने वाले को ही जलाती है, अतः वेद कहता है-

तं ते निर्वापयामसि- 'तेरी उस आग को-हृदय की जलन को-हम बुझाते हैं।'

ज्ञानी गुरुओं का काम है, शिष्य को ईर्ष्या से बचाए रखना। योग-दर्शन में, इसी कारण सुखी मनुष्य को देखकर उससे मैत्री करने और पुण्यात्मा को देखकर प्रसन्न होने का उपदेश किया गया है-

मैत्रीकरुणामुदितोपेक्षाणां सुखदुःखपुण्यापुण्य भावनातश्चित्तप्रसादनम्। - समाधिपाद ३३

'सुखी मनुष्यों के साथ मैत्री करने से, दुःखियों पर करुणा-दया करने से, धर्मात्माओं को देखकर प्रसन्न होने से और पापियों से उपेक्षा करने से मन निर्मल होता है।'

ईर्ष्या मन को मैला करती है, अतः ईर्ष्या के स्थान में योगदर्शन का बतलाया कार्य करना चाहिए।

अग्नि जलाकर भस्म कर देती है, यह स्वाभाविक है। ईर्ष्या अग्नि है। यह भी ईर्ष्यालु को जलाकर भस्म कर देती है। ईर्ष्यालु की दुर्दशा का वेद में बहुत ही करुणाजनक शब्दों में वर्णन किया गया है। वेद कहता है-

यथा भूमिर्मृतमनामृतान्मृतमनस्तरा।.......

'जैसे भूमि मुर्दादिल होती है, वरन् मुर्दा से भी मुर्दादिल होती है। जैसे मुर्दे का मन मरा हुआ होता है, ऐसे ही ईर्ष्यालु का मन होता है।'

भूमि के मुर्दा होने में किसी को भी सन्देह नहीं हो सकता। वेद कहता है, वह तो मुर्दे से अधिक मरी हुई होती है। भूमि पर

नाना प्राकर का गन्दा मल फेंका जाता है, नाना प्रकार के कुकर्म किये जाते हैं, इसी प्रकार जिसने ईर्ष्या के कारण अपने मन का नाश कर दिया है, अब उसकी मनोभूमि में चाहे कैसे ही गन्दे संस्कार और विचार आएँ, उसे ग्लानि कैसे हो? मन मर चुका। मन ही प्रतीत करता था, वह रहा नहीं। अब किस साधन से आत्मा को गन्द का ज्ञान हो!

दूसरी उपमा और भी प्राञ्जल है। मरनेवाला अपने सगे सम्बन्धियों को भी नहीं पहचान पाता। मरनेवाले के चारों ओर सम्बन्धी इकट्ठे होते हैं और पूछते हैं-

मां जानासि, मां जानासि-मुझे पहचानता है?

किन्तु वह किसी को भी नहीं पहचानता। यही अवस्था ईर्ष्यालु के मन की होती है, अर्थात् जिस प्रकार मृत्यु मन को मूर्च्छित कर देती है, सगे-सम्बन्धियों की पहचान का ज्ञान नहीं रहने देती, ईर्ष्या भी मन को मूर्च्छित कर देती है। वेद का कहना यह है कि ईर्ष्या मृत्यु का एक रूप है। ईर्ष्या करके तुम मृत्यु को बुला रहे हो। क्या मरना चाहते हो?मरना तो कोई नहीं चाहता। जो लोग ईर्ष्या-द्वेष में फँसे रहते हैं वे अपने जीवन की घड़ियाँ कम कर रहे हैं। वेद दीर्घ जीवन के लिए सद्भावों को प्रथम स्थान देता है। मृत्यु से बचने, दीर्घ जीवन पाने के लिए ईर्ष्या का त्याग सर्वथा आवश्यक है, अतः वेद ने कहा-

अदो यत्ते हृदि श्रितं मनस्कं पतयिष्णुकम्।

ततस्त ईर्ष्यां मुञ्चामि.....

'यह जो तेरा पतनशील तुच्छ मन है, जिसमें ईर्ष्या बस रही है, उससे ईर्ष्या को हटाते हैं।'

अतः मन में शिवसंकल्पों की भावना सदा जागरूक रखनी चाहिए। 'तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु' का जाप निरन्तर करना चाहिए। जब सबके लिए कल्याण-भावना मन में होगी, तब वहाँ ईर्ष्या का वास न हो सकेगा।

यह निश्चय है, जिस मन में ईर्ष्या रहती है, उसमें विद्वेषाग्नि जलती रहती है, उससे ईर्ष्यालु ही जलता है। मन का स्वभाव तथा सामर्थ्य एक समय में एक ही कार्य कर सकने का है, अतः ईर्ष्या की जलन के समय उसमें सद्भावों का उदय नहीं हो पाता। जिस प्रकार भौतिक अग्नि में पड़ी वस्तु जलकर भस्म हो जाती है, उसी प्रकार ईर्ष्या-अग्नि में पड़ा मन जलकर मानो राख हो जाता है अर्थात् वह स्वकार्य नहीं कर पाता। मन का कार्य है विचार करना, विवेक करना, हिताहित- भले-बुरे की परख करना, आत्मबोध करना आदि। ईर्ष्यालु के मन में तो ईर्ष्या ने आसन लगाया है, उसे और कुछ सूझता नहीं। ईर्ष्या के कारण बुद्धि, विवेक का नाश होता है। विवेक के कारण मनुष्य मनुष्य है। जब मनुष्यत्व का साधन ही लुप्त हो गया, तब उसके मरने में सन्देह ही क्या रहा?

"ओ३म्"

सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव

५-७ अक्टूबर २०१२

सत्यार्थ प्रकाश प्रणयन स्थली
नवलखा-महल, उदयपुर

सभी आर्य भाई-बहिनों की सेवा में अधिकाधिक संख्या में पधारने का विनम्र अनुरोध।

मुख्य आकर्षण

आर्यजगत् के शीर्षस्थ संन्यासी, वानप्रस्थ, उपदेशक, भजनोपदेशक, सार्वदेशिक सभा, प्रतिनिधि सभाओं, आर्य समाजों के अधिकारी वर्ग, लेखक- सम्पादक वर्ग, आर्य-श्रेष्ठि वर्ग, आर्य-कार्यकर्त्ता वर्ग की प्रेरक उपस्थिति।

विशिष्ट उपस्थिति

डॉ. सुखदेवचन्द सोनी

(प्रधान आर्य समाज शिकागोलैण्ड, यू.एस.ए.) संरक्षक न्यास।

प्रमुख विचार बिन्दु

सत्यार्थप्रकाश- ऐकेश्वरवाद

सत्यार्थप्रकाश- मानव जीवन निर्माण

सत्यार्थप्रकाश- शिक्षा पद्धति

सत्यार्थप्रकाश- ईश्वर का स्वरूप

सत्यार्थप्रकाश- पाखण्ड - खण्डन

विशेष- सत्यार्थप्रकाश-कार्यशाला

एक शाम परिवार के नाम

एक शाम समाज-राष्ट्र के नाम

निवेदक

महाशय धर्मपाल, अध्यक्ष
अशोक आर्य, कार्यकारी अध्यक्ष
स्वामी सुमेधानन्द, परामर्शदाता
भवानीदास आर्य, मन्त्री
नारायण मित्तल, कोषाध्यक्ष
डॉ. ए.एल. तापड़िया, संयोजक
शारदा गुप्ता, महिला संयोजिका

ओ३म्
'सत्यार्थ-सौरभ' मासिक पत्रिका
सदस्यता फार्म

वैदिक शिक्षाओं व भारतीय संस्कृति को जन-जन में प्रसारित करने हेतु आप द्वारा सत्यार्थ प्रकाश को समर्पित सत्यार्थ-सौरभ पत्रिका के प्रकाशन का निर्णय स्तुत्य है। मैं इस पत्रिका का संरक्षक/ आजीवन/ विशिष्ट/वार्षिक सदस्यता ग्रहण करता /करती हूँ।

पत्रिका सहयोगः-

संरक्षक पत्रिका- ११०००/- ☐
आजीवन (१५) वर्ष- १०००/- ☐
विशिष्ट सदस्य (५) वर्ष- ४००/- ☐
वार्षिक सदस्य- १००/- ☐

राशि जरिये/ ड्राफ्ट/ चैक/ मनीआर्डर/ नकद प्रेषित कर रहा/रही हूँ।

मेरा विवरण :-
१. नाम ....
....
२. पूरा पता ....
....
....
पिन ☐☐☐☐☐
३.टेलिफोन नं. ....
मोबाइल नं. ....
४. ई-मेल ....

नोटः
१.आप अपना सहयोग बैंक में भी जमा करवा सकते हैं बैंक खाता सं. ३१०१०२०१००४१५१८ यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, मुख्य शाखा उदयपुर। ऐसा करने वाले महानुभाव अपना नाम व पता दूरभाष या पत्र द्वारा तत्काल सूचित करने का श्रम करें, जिससे समय पर रसीद भेजी जा सके।
२.आप अपनी सहयोग राशि इलेक्ट्रॉनिक मनीऑर्डर से ना भेजें। यदि भेजते हैं तो दूरभाष या पत्र द्वारा सूचना अवश्य प्रेषित करें।
३.पता परिवर्तन होने पर परिवर्तित पते की सूचना अति शीघ्र भेजें।
४.जिन महानुभावों ने राशि भेज सदस्यता ग्रहण कर ली है, पर यह विवरण पत्र नही भरा है वे कृपया रिकार्ड हेतु इस प्रपत्र को भरकर अवश्य भेज दें।
५. कृपया अपने गाँव/शहर का पिन कोड अवश्य लिखें।

सारांश यह है कि ईर्ष्या से मनुष्य का भयंकर पतन होता है, अतः उससे बचने का यत्न करना चाहिए। यद्यपि इन मन्त्रों में भी साधन का निर्देश है, तथापि स्पष्ट बोध के लिए अगले मंत्रों को देखें।

ईर्ष्या की ओषधि

जनाद्विश्वजनीनात्सिन्धुतस्पर्य्याभृतम्।
दूरात्त्वा मन्य उद्भृतमीर्ष्याया नाम भेषजम्।।
अग्नेरिवास्य दहतो दावस्य दहतः पृथक्।
एतामेतस्येर्ष्यामुद्नाग्निमिवशमय।। -अथर्व. ७/४५/१-२

व्याख्या- इन दो मन्त्रों में ईर्ष्या की ओषधि बताई गयी है। दूसरे मन्त्र में ईर्ष्या का भयङ्कर स्वरूप बताया गया है। जंगल में जब आग लगती है, तो सारे वन को जला देती है। उस आग की लपेट से न वृक्ष बचते हैं, न पौधे, न पशु और न पक्षी। मृग भी उसमें जल मरते हैं और सिंह भी इसमें भस्म हो जाते हैं। पत्थर तक चटक जाते हैं। यह दावानल कैसे उत्पन्न होता है?-बाँस या उस जैसे वृक्ष वायु से आन्दोलित होकर, हिल-डुलकर एक दूसरे से

टकराते हैं, उनकी पारस्परिक टक्कर से, रगड़ से आग पैदा होती है। वह आग पहले उन्हीं को भस्म करती है जिनसे उत्पन्न होती है और फिर वह सारे जंगल में फैल जाती है। जंगल की आग मनुष्य के प्रयत्न से बुझनी लगभग असम्भव है। वह तो वृष्टि से बुझ सकती है; वृष्टि बादलों से आती है। बादल दूर, बहुत दूर होते हैं। कारीरि-इष्टि के द्वारा बादल बरसाये जा सकते हैं, या प्रभु की कृपा हो तब बादल बरसते हैं यही अवस्था ईर्ष्या की है; जिसमें यह उत्पन्न हो, पहले उसी का नाश करती है। इसका नाश करना सरल नहीं है। वह विचारवारि=विवेक-जल से ही शान्त हो सकती है। जैसे जंगल की आग-दावानल को बुझाने में समर्थ बादल दूर होते हैं अर्थात् कठिनता से प्राप्त हैं, ऐसे ही विवेक जल भी मिलना कठिन होता है। तभी वेद में कहा गया है-
दूरात्त्वा मन्य उद्भृतम्। - 'हे मन्यो! बड़ी कठिनता से तुझे प्राप्त

किया, पाला-पोसा है।'

विचार=विवेक=मन्यु सत्संगति से प्राप्त हो सकता है। जो मनुष्य विश्वजनीन हैं, जिन्होंने अपना सब-कुछ लोकोपकार में लगा रखा है और जो ओछे नहीं, उथले नहीं, वरन् सागर से भी अधिक गम्भीर हैं, जिनके हृदय में करुणा का समुद्र बहता है, संसार के दुःखी जनों को देखकर जो यह कह उठते हैं- प्रभो! ये सारे दुःख कष्ट, क्लेश-

मयि सन्तु मुच्यतां तु लोकः- 'मुझमें हों, संसार का इनसे छुटकारा हो जाए।'

उन नवरत्नों की सत्संगति और कृपा से विचार-रत्न प्राप्त होता है। किसी कवि ने कहा भी है-

सतां सगो हि भेषजम्- 'सज्जनों की संगति सचमुच दवा है।' वेद भी सज्जनों के संग से उत्पन्न होनेवाले विचार को भेषजम्-ओषधि बताता है।

हाँ, यह ओषधि प्राप्त बहुत कठिनता से होती है। वेद ने कहा-

दूरात्- बहुत कठिनता से।

किसी कवि ने इस बात को इस तरह तरह कहा-

भाग्योदयेन बहुजन्मसमार्जितेन सत्संगमं च लभते पुरुषो यदा वै।
अज्ञानहेतुकृत मोहमदान्धकारनाशं विधाय हि तदोदयते विवेकः।।

'अनेक जन्मों का कमाया भाग्य जब उदय होता है, तब कहीं मनुष्य को सत्संगति प्राप्त होती है। सत्संगति से मनुष्य का अज्ञान नष्ट होता है, उससे मोहादि दोष दूर होते हैं, और विवेक मिलता है।

सत्पुरुषों के सत्संग से मनुष्य को अपने दोषों का ज्ञान होता है। वह ज्ञान ही विवेक है। वह देखता है- यह महात्मा सदा प्रसन्न रहते हैं, किन्तु मुझमें प्रसन्नता का नाम नहीं। तब वह सोचने लगता है। सोच-विचार से उसे निश्चय होता है- यह तो दूसरों के हित में अपना सारा सामर्थ्य लगाते हैं। सारी शक्ति ये दूसरों की उन्नति में लगाते हैं। और मैं- मैं दूसरों की अवनति में मस्तिष्क लगाता हूँ। वह अनुभव करता है कि यह तो-

अग्नेरिव दहतः = जलानेवाली आग के समान है।

पत्थर में आग है, जल में आग है, लकड़ी में आग है- सर्वत्र आग है, किन्तु वह प्रसुप्त है, चुप है, किसी को नहीं जलाती, किन्तु आग का संसर्ग पाकर लकड़ी आदि की आग जल उठती है। ईर्ष्या भी तद्वत् छूत का रोग है। ईर्ष्यालु मनुष्य दूसरों में ईर्ष्या के भाव उत्पन्न कर देता है। फिर तो दावानल की भाँति दूर तक फैल जाती है, अर्थात् समाज के लिए ईर्ष्यालु ऐसा है, जैसे जंगल में आग लगानेवाला।

किन्तु स्मरण रखिए, वह घृणा का पात्र नहीं है। रोगी को दवाई दी जाती है। उससे घृणा नहीं की जाती। इस प्रकार विवेक-जल से ईर्ष्या अग्नि को शान्त करना चाहिए और विवेक प्राप्त करने के लिए सर्वहितकारी सन्मनुष्यों का संग, ऋषि-मुनि परोपकारी महामनुष्यों के रचे सद्ग्रन्थों का श्रवण, पठन, मनन, चिन्तन करना चाहिए। इसमें आलस्य या प्रमाद के कारण अन्तर-नागा नहीं पड़ने देना चाहिए। निरन्तर सद्ग्रन्थों के पढ़ने, लगातार महामनुष्यों का संग करने से उत्पन्न होकर दृढ़ हुआ विवेक-जल ईर्ष्यादि सब दूषित अग्नियों को शान्त कर देता है। ❑❑❑

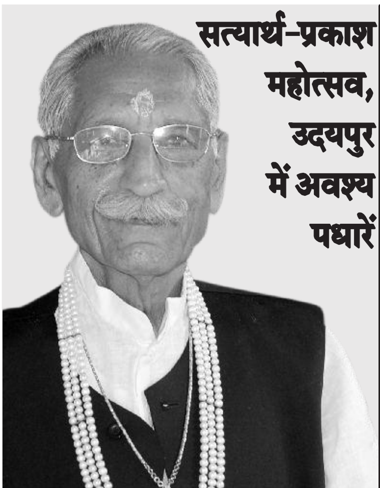

सत्यार्थ-सौरभ घर-घर पहुंचावें

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष - न्यास

सत्यार्थ-प्रकाश महोत्सव ५ से ७ अक्टूबर २०१२ में पधारने वाले बन्धु

कृपया ध्यान दें-

१.सामान्य आवास व भोजन की व्यवस्था निःशुल्क होगी।
२.होटल में आरक्षण कराने वाले बन्धु तुरन्त मो.- ०९८२९०६३११० पर सम्पर्क करें।
३.अक्टूबर में उदयपुर में रात्रि-समय हल्की सर्दी हो जाती है तदनुरूप बिस्तर-वस्त्रादि साथ लावें।
४.सुव्यवस्था के लिए अपने आगमन की पूर्व सूचना अवश्य देवें।
५.अपना पावन आर्थिक सहयोग धनादेश/ ड्राफ्ट/चैक द्वारा 'श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास' के नाम भेजने की कृपा करें। यह दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अन्तर्गत् कर-मुक्त है।

आधा अधूरा प्रयास

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात हमने लोक कल्याणकारी राज्य की स्थापना की है। वैसे भी भारतीय मनीषा ने लोक कल्याण को सदैव शासन का प्रथम कर्त्तव्य माना है ।शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवहन आदि क्षेत्रों में शासन ने अपने उत्तरदायित्व को समझने का प्रयास किया है। नव जागरण के पुरोधा महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में लिखा है–

‘ जो राजा राज्यपालन में सब प्रकार तत्पर रहता है, उसको सदा सुख बढता है। (सत्यार्थ प्रकाश पृ.१५५)

आगे लिखा है –‘ राजाओं का प्रजा पालन ही करना परमधर्म है’। (सत्यार्थ प्रकाश पृ.१५७)

ऋषि राजा और प्रजा के संबंधों को बड़ी सुंदरता के साथ निरूपित करते हैं– ‘राजा, प्रजा को अपने संतान के सदृश सुख देवे और प्रजा अपने पिता सदृश राजा और राज–पुरुषों को जाने’। (सत्यार्थ प्रकाश पृ.१६६)

प्राचीन भारतीय मनीषा द्वारा स्थापित मानदंड अगर राजा –प्रजा के मध्य स्थापित हो जाय तो न भ्रष्टाचार हो और न कोई भ्रष्ट हो। दुर्भाग्य से आज इसके ठीक विपरीत वातावरण है। राज्य मनुष्य को पतन के गर्त में धकेलने वाले साधनों का समूल नष्ट करने के बजाय उनसे राजस्व के जुगाड में लगा रहता है। लोक स्वाथ्य की चिंता करने वाली सरकार शराब, धूम्रपान, तम्बाकू, अफीम विक्रय को छूट देकर, जनता के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड कर रही है। विचार यह करना है कि उक्त छूट जिससे न केवल जनता के स्वाथ्य पर गंभीर विपरीत प्रभाव पडता है वरन नाना प्रकार की सामजिक बुराइयां व अपराध पनपते हैं लाखों घर जिसके कारण बर्वाद हो गए ऐसे उत्पादों को क्या केवल इस कारण पूर्ण–रूपेण प्रतिबंधित नहीं किया जावे कि उससे राजस्व की प्राप्ति होती है। यह भी ध्यान रखना चाहिए कि गलत साधनों से होने वाली आय विनाश की कारक होती है, यह भी कि ऐसे शासन को कभी भी लोक कल्याणकारी राज्य नहीं कहा जा सकता ।

कुछ विशिष्ट अवसरों को ‘ड्राई डे’ घोषित कर, धूम्रपान को सार्वजनिक स्थल पर प्रतिबंधित कर, तम्बाकू तथा सुपारी पर वैधानिक चेतावनी लिखकर न तो इनका सेवन रुक सकता है, न रुका है। जनता को शिक्षित करने के साथ–साथ इन मादक, स्वास्थ्य विनाशक पदार्थों पर पूर्ण प्रतिबन्ध आवश्यक है ।इसके लिए आधे अधूरे प्रयास नहीं पूर्ण इच्छा शक्ति के साथ कठोर कदम उठाने आवश्यक हैं।

ऐसा ही आधा–अधूरा कदम गुटखा पर रोक लगाना है। वस्तुतः खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम में ऐसे सभी खाद्य पदार्थों के विक्रय पर प्रतिबन्ध लगाया है जिनमे तम्बाकू हो। परन्तु मजे की बात ये है कि तम्बाकू के विक्रय पर कोई प्रतिबन्ध नहीं है। यह ठीक वैसा ही है जैसे जहर मिले खाद्य पदार्थ का बेचना तो प्रतिबंधित कर दिया जाय परन्तु जहर खुले आम बेचने दिया जाय।

यहाँ अति संक्षेप में तम्बाकू तथा इसके स्वास्थ्य पर होने वाले दुष्प्रभावों को भी जान लें–

विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट के अनुसार भारत में प्रतिवर्ष १८ लाख लोगों की मृत्यु तम्बाकू और सिगरेट के सेवन करने से होती है। एक अनुमान के अनुसार धूम्रपान के कारण होने वाले कैंसर से कुल ५.३५ लाख लोगों की मौतें प्रतिवर्ष हो रही हैं, एक अन्य अनुमान के अनुसार वर्ष २०३० तक भारत में तम्बाकू से होने वाले कैंसर के कारण मरने वालों की संख्या एक करोड़ १५ लाख को पार कर जाएगी।

ये घातक स्थिति तम्बाकू में मौजूद अत्यन्त हानिकारक तत्व निकोटिन की वजह से है। निकोटिन से कैंसर व उच्च्व रक्तचाप

जैसे गंभीर रोग पैदा होते हैं। एक पौण्ड तम्बाकू में निकोटीन नामक जहर की मात्रा लगभग २२.८ ग्राम होती है। इसकी १/३८०० मात्रा (६ मिलीग्राम) एक कुत्ते को तीन मिनट में मार देती है। तम्बाकू की लत इसी निकोटीन के कारण पडती है। निकोटीन ५ सेकंड में दिमाग पर असर करता है और सेवन करने वाले को इस जहर की लत लगा देता है। तम्बाकू में विद्यमान कार्सिनोजैनिक एक दर्जन से भी अधिक हाइड्रोकार्बन्स जीवकोशों की सामान्य क्षमता को नष्ट कर उन्हें गलत दिशा में बढ़ने के लिए विवश कर देते हैं, जिसकी परिणति कैंसर की गाँठ के रूप में होती है। भारत में किए गए अनुसंधानों से पता चला है कि गालों में होने वाले कैंसर का मुख्य

कारण खैनी अथवा जीभ के नीचे रखी जाने वाली, चबाने वाली तम्बाकू है। तम्बाकू में निकोटिन के अलावा कार्बन मोनोक्साइड, मार्श गैस, अमोनिया, कोलोडीन, पापरीडिन, कोर्बोलिक ऐसिड, परफैरोल, ऐजालिन सायनोजोन, फास्फोरल प्रोटिक एसिड आदि कई घातक विषैले व हानिकारक तत्व पाए जाते हैं। कार्बन मोनोक्साइड से दिल की बीमारी, दमा व अंधापन की समस्या पैदा होती है। मार्श गैस से शक्तिहीनता और नपुंसकता आती है। अमोनिया से पाचन शक्ति मन्द व पित्ताशय विकृत हो जाता है। कोलोडीन स्नायु दुर्बलता व सिरदर्द पैदा करता है। पापरीडिन से आँखों में खुश्की व अजीर्ण की समस्या पैदा होती है। कोर्बोलिक ऐसिड अनिद्रा, चिड़चिड़ापन व भूलने की समस्या को जन्म देता है। परफैरोल से दाँत पीले, मैले और कमजोर हो जाते हैं। ऐजालिन सायनोजोन कई तरह के रक्त विकार पैदा करता है। फास्टोरल प्रोटिक ऐसिड से उदासी, टी.बी., खाँसी व थकान जैसी समस्याओं का जन्म होता है।

कई विशेषज्ञों ने शोध के बाद दावा किया है कि तम्बाकू के कारण करीब ४० प्रकार के कैंसर होने का खतरा बना रहता है। यदि आँकड़ों पर नजर डालें तो पता चलता है कि विश्व में हर ८ सेकिण्ड में धूम्रपान की वजह से एक व्यक्ति की मौत हो रही है। शायद कम लोगों को पता होगा कि एक सिगरेट पीने से व्यक्ति की ५ मिनट आयु कम हो जाती है। २० सिगरेट अथवा १५ बीड़ी पीने वाला एवं करीब ५ ग्राम सुरती, खैनी आदि के रूप में तम्बाकू प्रयोग करने वाला व्यक्ति अपनी आयु को १० वर्ष कम कर लेता है।

प्राचीन समय में भी अनेक देशों में तम्बाकू और इसके उत्पादों का सेवन करने वालों को कड़ी सजा का प्रावधान था। भारत में जहाँगीर बादशाह ने तम्बाकू का प्रयोग करने वालों की यह सजा निर्धारित कर रखी थी कि उस आदमी का काला मुँह करके और गधे पर बैठाकर पूरे नगर में घुमाया जाए।

तुर्की में जो लोग धूम्रपान करते थे, उनके होंठ काट दिए जाते थे। जो तम्बाकू सूँघते थे, उनकी नाक काट दी जाती थी।

ईरान में भी तम्बाकू का प्रयोग करने वालों के लिए कड़े शारीरिक दण्ड की व्यवस्था थी।

गुटखा प्रतिबंधित होने पर इसके व्यसनियों ने नया रास्ता निकाल लिया। पान मसाला नाम से उपलब्ध उत्पाद प्रतिबंधित नहीं है न ही अकेले तम्बाकू का विक्रय प्रतिबंधित है। अतः वे दोनों को पृथक्-पृथक् क्रय कर मिलाकर उपभोग में ला रहे हैं। इसे कहते हैं कानून को ठेंगा दिखाना।

यहाँ यह भी विचारणीय है कि तम्बाकू सेवन का एक बड़ा माध्यम धूम्रपान है। तम्बाकू चबाने वाला तो स्वयं को ही नुकसान पहुँचाता है परन्तु धूम्रपान करने वाला [Active smoker] स्वयं के अतिरिक्त पास खड़े इंसान [Passive smoker] को भी नुकसान पहुँचाता है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि कड़े निर्णब सरकार द्वारा लिए जायँ। जहाँ तक राजस्व का प्रश्न है लोक-स्वास्थ्य की कीमत पर कोई भी अर्जन अनैतिक है फिर तम्बाकू-जनित बीमारियों पर होने वाला व्यय भी तो बचेगा, इस बात को नहीं भूलना चाहिए।

समाज व् राष्ट्र के प्रत्येक घटक की शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति के लिए तम्बाकू और इसके प्रत्येक उत्पाद के विक्रय पर ही नहीं उत्पादन तथा सेवन पर रोक लगा देनी चाहिए। ऐसा जितना शीघ्र हो जाय अच्छा है।

– अशोक आर्य
०९३१४२३५१०१, ०९००१३३६८३६

❑❑❑

वैदिक धर्म तत्त्व

(२) गताङ्क से आगे.........

आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय

पति और पत्नी विवाह द्वारा परिवार का रूप ग्रहण कर लेते हैं। परिवार के रूप में एक ऐसे सशक्त केन्द्र की रचना की जाती है कि जिससे धर्म तत्व अपनी ज्योति का पूरा प्रतिबिम्ब डालता है। परिवार के बढ़ते हुए सदस्यों की पारस्परिक अनुकूलता से प्रेममय जीवन की सुगन्धि उस परिवार को भीतर बाहर से भर देती है। उससे प्रत्येक परिवार के सदस्य का मन प्रफुल्लित हो जाता है। परिवार धर्म तत्व की धात्रीशाला है। धर्म को बढ़ाने की और उसे कसौटी पर कसने की संम्भावनाएँ पारिवारिक जीवन में क्षण-क्षण में आती हैं। अव्यक्त और अमूर्त धर्म तत्व परिवार के जीवन में व्यक्त रूप ग्रहण करता है। नीति, दर्शन, ज्ञान, भक्ति, पुण्य, दान, व्रत, पर्व, उत्सव, कथा, वार्ता, संस्कार आदि जो जीवन के विविध प्रेरक तत्व हैं, वे परिवार में विशेष रूप से पल्लवित होते हैं। वस्तुतः इनके बहुविध विकास का नाम ही सांस्कृतिक जीवन का वैभव है। राष्ट्र की महती परम्पराएँ परिवार में सुरक्षित रहती हैं। कुल को समाज की इकाई मानना भारतीय वैदिक संस्कृति का उद्घोष है। कुल का आचार, कुल की मर्यादा, कुल का गौरव इन शब्दों का भारतीय संस्कृति में वास्तविक महत्व था। कुलों में कुमार और कुमारी जन्म लेते हैं। कुल संस्कृति का सूक्ष्म प्रभाव उनके मन पर पड़ता है। कुल या परिवार धर्म संस्कृति की सच्ची धमनियाँ रही हैं। कुल के प्रत्येक सदस्य का मानस अपने-अपने कुल की संस्कृति का एक टुकड़ा ही समझना चाहिए। कुल एक स्वाभाविक विश्वविद्यालय ही है। जिन उत्तम कुलों में धर्म, नीति और सांस्कृतिक जीवन की आराधना होती है, उन्हें महाकुल कहते हैं। महाभारत और धर्मशास्त्र में कुलों के सांस्कृतिक आदर्श के विषय में बहुत ही अच्छा लिखा है-'असत्य और बल से धन प्राप्त कर लेना संभव है किन्तु महाकुल का जो आचार है, वह धन से नहीं प्राप्त किया जा सकता।' इस पर धृतराष्ट्र ने पूछा-हे विदुर मैं जानना चाहता हूँ कि महाकुल किस प्रकार बनते हैं?विदुर ने उत्तर दिया - हे राजन् ! तप, इन्द्रिय-निग्रह, ब्रह्मदर्शन, ज्ञान, यज्ञ, सदा अन्नदान, शुद्ध विवाह और सम्यक् आचार इन सात गुणों से साधारण कुल भी महाकुल बन जाते हैं। जो कभी सदाचरण का अतिक्रमण नहीं करते, जो ठीक प्रकार से विवाह सम्बन्ध करते हैं, जो झूठ का परित्याग करके

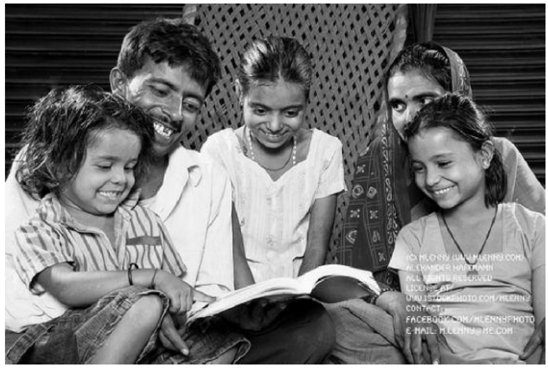

धर्म का आचरण करते हैं, जो कुल को यशस्वी बनाने का प्रयत्न करते हैं उनके कुल महाकुल बनते हैं, जो आचार से हीन हैं, उन कुलों में कितना भी धन हो, पर वे प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं कर सकते। अल्प धन होने पर भी जिन कुलों में सदाचार का पालन होता है, वे ही यश और सम्मान पाते हैं और उनकी गिनती महाकुलों में होती है।

(उद्योग पर्व ३६।७-२-६,मनु. ३।६३-६७)।

यह एक बुद्धि संगत विचार है कि धन कुलों की महत्ता का कारण नहीं। कुल की ऊँचाई का आधार तो नीति धर्म और सद्गुणों का पालन है। परिवार को महान् बनाओ, श्रेष्ठ बनाओ, उसे रूप सम्पन्न करो, कर्म-शक्ति से प्राण- सम्पन्न करो, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष संज्ञक पुरुषार्थ से युक्त करो, स्वयं अपनी जीवन-शक्ति की नवीन धारा उसमें प्रवाहित करो इस प्रकार की उत्साहमयी मानसिक स्थिति परिवार की उच्चता का कारण बनती है। कुल का प्रत्येक सदस्य कुछ इस प्रकार सोचता है- 'मैं अपने सद्गुणों से इस परिवार के जीवन को सींच दूँ मेरे कारण कुल धर्म की महती शृंखला टूटने न पावे मैं इस शृंखला में निर्बल कड़ी न बनूँ। प्रत्येक गृहपति इस प्रकार की उदात्त भावनाओं से आयु पर्यन्त अपने परिवार का संवर्द्धन करता रहता है। माता-पिता, पति-पत्नी, पुत्र-पुत्री, भाई-बहिन से लहलहाता हुआ परिवार रूपी उद्यान कितना रमणीय और रसपूर्ण होता है, इसे शब्दों में कहना कठिन है।'

परिवार का ध्रुव-बिन्दु माता है। जैसे द्युलोक अपने स्थान पर दृढ़ है, जैसे पृथिवी अपने स्थान पर दृढ़ है, जैसे विश्व अपनी

धुरी पर दृढ़ है, जैसे चट्टानें अपने-अपने स्थान पर दृढ़ हैं वैसे ही पति कुल में पत्नी का स्थान दृढ़ है। स्त्री ही परिवार के जीवन रस का अक्षय स्रोत है। भारतीय परिवार में जब तक स्त्री का स्थान, उसकी मर्यादा, उसका सम्मान सकुशल है, तब तक यह संस्कृति भी सकुशल रहेगी। भूतकाल की परम्पराएँ और भविष्य की आशाएँ हैं, उनकी सुरक्षा और उद्भव स्त्री के आधीन है। स्त्री या गृह-पत्नी परिवार का मध्य बिन्दु है। वह धर्म संस्कृति की धुरी है।

वैदिक आर्य समाज की शक्ति का स्रोत उसका पारिवारिक जीवन है। अनेक परिवर्धनों के बीच में आर्य परिवार की यह दृढ़ शक्ति बारम्बार उभरती हुई दिखाई पड़ती है। परिवार की इस शक्ति का विघटन किसी भी प्रकार समाज के लिए हितकारी नहीं हो सकता। वैदिक आर्य परिवार सामाजिक जीवन के क्षेत्र में मूल्यवान प्रयोग है। उसे सब तरह से बढ़ाना, पल्लवित और पुष्पित करना आवश्यक है। आजकल के संक्रान्ति-काल में तो परिवार के संगठन को और भी सुसंस्कृत करना आवश्यक है। धर्म-तत्व परिवार के प्रत्येक सदस्य के समक्ष कर्तव्य का सन्देश लाता है, पिता-माता, पति-पत्नी, पुत्र-पुत्री, भाई-बहिन, जाति, बन्धु जिनका परिवार से नाता है, वे सब कर्तव्य के ऋण से बँधे होते हैं। कर्तव्य-भावना का ही दूसरा नाम बलीब-भावना है। जहाँ व्यक्ति दूसरे के लिए अपने स्वार्थ और सुख का समर्पण करता है, उसे जीवन का स्वर्ग कहते हैं। दूसरों से छीन झपट कर अपने लिए कुछ प्राप्त करने की बात वे मन में नहीं लाते। यही पारिवारिक जीवन का रस है। जहाँ एक व्यक्ति दूसरे की सहायता और क्षेम की बात सोचता है, वही आदर्श स्थिति स्वर्ग है। इसके विपरीत जब हम प्रत्येक वस्तु को अपने स्वार्थ की दृष्टि से देखते हैं-और अधिकार की बात कहकर केवल पाने या लेने की इच्छा रखते हैं, तो हमारे इस आचरण से संघर्ष और विरोध उत्पन्न हो जाता है। उस तनाव की स्थिति या खींचातानी में जो न हो जाए, थोड़ा है। नीति-शास्त्र की दृष्टि से उसे ही नरक कहा जाता है। आर्य समाज के जिस कोने में परस्पर प्रेम और स्वार्थ-त्याग की स्थिति का सबसे अधिक अनुभव किया जाता रहा है, जहाँ प्रीति की सुगन्ध सबसे अधिक महकती रही है, वह क्षेत्र वैदिक आचरण युक्त आर्य परिवार ही है।

२४३, अरावली अपार्टमेन्ट (अलकनन्दा) नई दिल्ली ११००१९

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थ प्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित

मात्र ४०₹

सत्यार्थ प्रकाश (मानक संस्करण) **अवश्य खरीदें।**

प्राप्ति स्थल : श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर - ३१३००१

- अधिकारी वर्ग से विशेष निवेदन-कृपया अपनी संस्था को 'सत्यार्थ-सौरभ' परिवार से अवश्य जोड़े।
- विद्वानों से निवेदन है कि वे केवल सत्यार्थ-सौरभ के लिये लिखे गये अपने संक्षिप्त, सारगर्भित लेख प्रेषित करने की कृपा करें।

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो। सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके,एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थ प्रकाश (मानक संस्करण) की द्वितीय आवृत्ति छपने में है। कृपया निम्नानुसार सहयोग कर लागत मूल्य से आधी कीमत में सत्यार्थ प्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
एक लाख रु.	दस हजार	७५०००	७५००
५००००	५०००	२५०००	२५००
१००००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया,उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य	भंवरलाल गर्ग	डॉ.अमृत लाल तापड़िया
मंत्री-न्यास	कार्यालय मंत्री	उपमंत्री-न्यास

जिन सज्जनों को यह पत्रिका प्राप्त हुई है, वे तो अवश्य ही 'सत्यार्थ - सौरभ' परिवार से तुरन्त जुड़ने की कृपा करें।

आर्य समाज द्वारा स्त्रीशिक्षा के लिए स्थापित की जाने वाली पहली संस्था कन्या महाविद्यालय जालन्धर थी। यह कई दशाब्दियों तक विभिन्न आर्य समाजों द्वारा खोली जाने वाली कन्या पाठशालाओं और महाविद्यालयों का मार्गदर्शक ज्योतिस्तम्भ बना रहा। अपनी अनेक विशेषताओं के कारण यह अपने युग की एक अतीव महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय शिक्षा-संस्था थी और ऐसी अन्य शिक्षा-संस्थाओं के लिए आदर्श समझी जाती थी।

इस संस्था के संस्थापक लाला देवराज अपने को स्त्रीशिक्षा का कोलम्बस कहा करते थे, क्योंकि जिस प्रकार कोलम्बस ने नई दुनिया का पता लगाया था, उसी प्रकार उन्होंने कन्या महाविद्यालय जालन्धर द्वारा स्त्रीशिक्षा की, और इसके माध्यम से नारी शक्ति के जागरण की, नयी क्रान्तिकारी खोज की थी। यह महाविद्यालय अपनी अनेक विलक्षण विशेषताओं के कारण सदा स्मरण किया जायेगा। इसने कन्याओं की शिक्षा के लिए हिन्दी में पहली बार प्राथमिक श्रेणियों के लिए उपयुक्त पुस्तकें तैयार कीं। कन्याओं में शिक्षा-प्रसार के साथ-साथ समाज-सुधार और राष्ट्रीय स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष करने की भावना उत्पन्न की। वर्तमान भारत में, विशेष रूप से पंजाब के शैक्षणिक, सामाजिक, धार्मिक और राष्ट्रीय क्षेत्रों में यहाँ से शिक्षा प्राप्त करने वाली स्नातिकाओं ने बड़ा महत्त्वपूर्ण कार्य किया। इस संस्था का पारिवारिक, राष्ट्रीय, सुधारवादी वातावरण उस समय के सभी नेताओं द्वारा सराहा जाता था। यह महाविद्यालय उत्तर भारत में लड़कियों के लिए उस समय पहला छात्रावास बनाने वाली संस्था थी, जबकि सरकार इसे असम्भव समझती थी। उन दिनों स्त्रीशिक्षा का कार्य ऊसर की खेती समझा जाता था। इस संस्था की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसने असम्भव समझे जाने वाली स्त्रीशिक्षा को सम्भव बनाया।

स्थापना का कारण- कन्या महाविद्यालय की स्थापना किन कारणों से प्रेरित होकर की गयी, यह बात महात्मा मुंशीराम की डायरी में अंकित २६ जनवरी, १८८६ के निम्नलिखित अवतरण से स्पष्ट हो जाती है- ''कचहरी से लौटकर जब अन्दर गया तो वेदकुमारी (महात्माजी की कन्या) दौड़ी हुई आयी और जो भजन पाठशाला से सीख कर आयी थी, सुनाने लगी-

एक बार ईसा ईसा बोल, तेरा क्या लगेगा मोल?
ईसा मेरा राम रमैया, ईसा मेरा कृष्ण कन्हैया।

''मैं बहुत चौकन्ना हुआ। पूछने पर पता लगा कि आर्य जाति की पुत्रियों को वैसे गीतों के साथ-साथ अपने शास्त्रों की निन्दा करना भी सिखाया जाता है। निश्चय किया कि अपनी पुत्री पाठशाला अवश्य खोलनी चाहिए।''

यह छोटी-सी घटना कन्या महाविद्यालय जालन्धर की स्थापना का कारण बनी। श्री मुंशीराम ने इस विषय पर जब अपने अन्य मित्रों तथा सहयोगियों से बात की तो उन्हें पता चला कि अन्य आर्यपुरुषों को भी ऐसी शिकायत थी। इसे दूर करने और हिन्दुओं की नयी पीढ़ी को ईसाइयत के रंग में रँगने के प्रयास को विफल करने तथा कन्याओं को अपने धर्म व वैदिक संस्कृति की शिक्षा देने की दृष्टि से जालन्धर में एक आर्य कन्या महाविद्यालय स्थापित करने का निर्णय जालन्धर आर्यसमाज ने किया।

महात्मा मुंशीराम तथा लाला देवराज जालन्धर आर्य समाज के प्रधान और मन्त्री थे। वे इस कार्य को सफल बनाने का प्रयास करने लगे। दोनों का यह स्वभाव था कि वे जिस विचार को सोचते थे, उसे तुरन्त कार्यरूप में परिणित करने के लिए कटिबद्ध हो जाते थे और भीषण-से-भीषण विघ्न-बाधाओं के बावजूद उसे पूरा करके छोड़ते थे। महात्मा मुंशीराम तो कुछ समय बाद बालकों की शिक्षा के लिए स्थापित किये जाने वाले गुरुकुल काँगड़ी के स्वप्न को साकार करने में संलग्न हो गये, किन्तु लाला देवराज ने अपना सारा जीवन कन्याओं की शिक्षा में लगा दिया। कन्या महाविद्यालय की स्थापना और विकास के लिए अपना तन-मन-धन समर्पित कर दिया। यदि वह इसके लिए अनथक उद्योग और अध्यवसाय न करते तो इसकी स्थापना नहीं हो सकती थी। यह उनके जीवन का एकमात्र अनन्य कार्य था। उन्होंने इसे ऐसे स्वीकार किया, जैसे कोई व्यक्ति नए धर्म को पूरे जोश के साथ स्वीकार करता है, श्रद्धालु भक्त की तरह एकनिष्ठ होकर उसका पालन करता है और कट्टरपन्थी धर्मान्धता के साथ उसका प्रचार करता है। लाला देवराज के व्यक्तित्त्व का कन्या महाविद्यालय जालन्धर पर गहरा प्रभाव है। उसका इतिहास और स्वरूप समझने के लिए हमें पहले लालाजी के व्यक्तित्त्व का परिचय प्राप्त करना आवश्यक है।

कन्या महाविद्यालय स्थापित करने के पहले प्रयास

लाला मुंशीराम और लाला देवराज के प्रयास से १८८६ में जालन्धर की आर्यसमाज ने कन्या पाठशाला स्थापित करने

का प्रस्ताव पास किया और इसके लिए चार रुपये मासिक का व्यय भी मंजूर किया गया। किन्तु प्रस्ताव पास करना एक बात थी और उसे क्रियान्वित करना दूसरी बात। समाज ने रुपये की व्यवस्था कर दी थी, किन्तु कन्याओं को पढ़ाने वाली अध्यापिकाओं की तथा इसमें पढ़ने वाली छात्राओं की व्यवस्था करना अतीव दुस्साध्य कार्य था। उन दिनों पंजाब में स्त्रीशिक्षा का प्रचलन बिल्कुल नहीं था, इसलिए लड़कियों को पढ़ाने वाली अध्यापिका प्राप्त न होने से १८८६ के प्रस्ताव पर उस वर्ष कोई अमल नहीं हो सका और कन्या पाठशाला

लाला देवराज-स्त्री शिक्षा के कोलम्बस

लाला देवराज का व्यक्तित्त्व- कन्या महाविद्यालय, जालन्धर लाला देवराज के त्याग, तपस्या, साधना, कल्पना, भावना, धुन, लगन, अध्यवसाय और भगीरथ परिश्रम का परिणाम है। जैसे गुरुकुल काँगड़ी अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द (महात्मा मुंशीराम) की कल्पना और साधना का मूर्त रूप है, हिन्दू विश्वविद्यालय बनारस, महामना मदनमोहन मालवीय की तपस्या की तीर्थभूमि है, शान्ति निकेतन कवीन्द्र रवीन्द्र के स्वप्न की साकार प्रतिमा है, उसी प्रकार कन्या महाविद्यालय जालन्धर लाला देवराज की निष्ठा और साधना की पुण्यस्थली है।

लाला देवराज का जन्म जालन्धर के सुप्रतिष्ठित, सुप्रसिद्ध, सम्पन्न, समृद्ध, कुलीन, जमींदार सोंधी परिवार में हुआ था। उनके पिता शालिगराम शहर के नामी रईस और साहूकार थे। सरकारी सम्मान की सूचक जैलदारी की पदवी उनके वंश में परम्परागत रूप से चली आ रही थी। लालाजी के पिता आर्य समाजी और विद्याप्रेमी नहीं थे, किन्तु उन्हें अपने बच्चों को ऊँची-से-ऊँची शिक्षा दिलाने की आकांक्षा थी। उन्होंने अपने दो बड़े पुत्रों- लाला बालकराम और लाला भक्तराम को बैरिस्टरी की शिक्षा पाने के लिए लण्डन भेजा था। उनकी यह उत्कट इच्छा थी कि अपने बड़े भाइयों की भाँति लाला देवराज भी विदेश से शिक्षा प्राप्त करके कोई बड़ी डिग्री लायें और अपने को सम्पन्न बनाकर परिवार के वैभव में वृद्धि करें।

किन्तु देवराज बचपन से ही वीतराग प्रवृत्ति वाले तथा गुरुनानक जैसे निर्मोही थे। उनका मन घर के कामकाज में तथा पैसा कमाने में नहीं, अपितु धार्मिक, सामाजिक और परोपकारी कार्यों में लगता था। सम्भवतः, इसकी घुट्टी उन्हें अपनी अतीव धर्मनिष्ठ माताजी से मिली थी। बचपन से ही आपके मन में समाज सुधार की उग्र भावना जागृत हो चुकी थी। आपने अपने घर में एक क्लब की स्थापना की। इसके सदस्य सर्वश्री भक्तराम, बालकराम तथा बहनोई लाला मुंशीराम थे। इसके अधिवेशनों में आप बड़ी गम्भीरता से समाज सुधार सम्बन्धी विषयों की चर्चा किया करते थे, अपने बनाये धार्मिक भजन गाया करते थे। इन भजनों को सुनकर इनकी मित्र-मण्डली के सदस्य इनका मजाक उड़ाते थे। क्लब का कमरा उनके हँसी के ठहाकों से गूँज उठता था, किन्तु साथियों का हँसी-मजाक आपको अपने ध्येय से विचलित नहीं कर सका। इस प्रसंग में यह उल्लेखनीय है कि यह मित्र-मण्डली ही जालन्धर में आर्य समाज का श्री गणेश करने वाली थी। १८८४ तक इसके चार सदस्यों में सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण स्थान इस समाज के मन्त्री लाला देवराज का था। वही इसको शुरू करने वाले थे। उनके दोनो बड़े भाई बैरिस्टर बनकर विलायत से आ गये। उनमें श्री भक्तराम चोटी के फौजदारी वकील तथा जालन्धर के बेताज बादशाह माने जाते थे। उनके बारे में यह प्रसिद्ध था कि वे अपनी कुशल पैरवी से किसी भी खूनी को फाँसी के तख्ते से बचा सकते थे।

किन्तु लाला देवराज अपने भाइयों से सर्वथा भिन्न प्रकृति रखते थे। उनकी अभिरुचि धार्मिक विषयों में थी। वे पिता की नाराजगी सहते हुए भी सांसारिक विषयों से सर्वथा उदासीन रहते तथा धार्मिक एवं समाज सुधार के कार्यों में तल्लीन रहते थे। लाला मुंशीराम उन्हीं के प्रभाव से धार्मिक विषयों की ओर आकृष्ट हुए और अपने मद्यप मित्रों का साथ छोड़कर लाला देवराज के साथ आर्य समाज के कार्यों में बड़ी दिलचस्पी लेने लगे। लाला देवराज ने उन्हें जालन्धर आर्य समाज का प्रधान बनाया।

लाला देवराज के धार्मिक कार्य उनके पिता के लिए असह्य थे। उनके दो बड़े लड़के विलायत में साहबों जैसा जीवन बिता रहे हों और उनका तीसरा पुत्र आर्य समाज के पीछे दीवाना हो, इसे वे सहन नहीं कर सकते थे। उन्होंने अपने पुत्र को काफी समझाने-बुझाने की कोशिश की, लेकिन जब पिता की बात पुत्र को समझ न आयी और पिता बहुत गरम होने लगे तो वे पिता के

भीषण रोष ओर असन्तोष से बचने के लिए एक रात को कुछ कपड़े और रुपये लेकर घर से निकल भागे। पिता ने बम्बई, कलकत्ता, करांची आदि सब ओर तार खटखटाये। बीस वर्ष की आयु का महत्त्वाकांक्षी युवक कलकत्ता के निकट डायमण्ड हार्वर में तब पकड़ा गया जब वह वहाँ से अण्डमान द्वीपसमूह की ओर जाने की तैयारी में था। उनकी प्रबल अभिलाषा थी कि वह वहाँ जाकर बस जायें और वहाँ के कैदियों में वैदिक धर्म का प्रचार करें। वह घर वापिस लौटने के लिए इसी शर्त पर तैयार हुए कि उनके कामों में घर वालों की ओर से कभी कोई अड़चन नहीं डाली जायेगी और उन्हें आर्यसमाज का कार्य करने की पूरी स्वतन्त्रता रहेगी। इसके बाद वह पूर्णरूप से आर्यसमाज के कामों में जुट गये। उन्होंने अपने जीवन के लिए स्त्रीशिक्षा का कार्य चुन लिया। इस विषय में सबसे बड़ा प्रभाव उनकी माताजी का था। वह कहा करते थे– ''मेरे हृदय में माताजी ने मातृपूजा या मातृवन्दना की भावना को जाग्रत किया है, और इसके लिए सदैव उनका ऋणी हूँ।'' उनके शब्दों में, ''मुझे पूरा विश्वास है कि विश्व की प्रधान शक्ति मातृशक्ति ही है। देश को, समाज को स्वतन्त्र और सुखी बनाने में इसका ही पूरा हाथ होगा। इनकी सेवा समाज की सबसे बड़ी और सच्ची सेवा है। मुझे इसमें बहुत विश्वास है।'' वह आजीवन मातृजाति के कल्याण के लिए लगे रहे और इस दृष्टि से उन्होंने अपनी सारी शक्ति कन्या महाविद्यालय के माध्यम से नारी–जाति के जागरण में लगा दी।

स्थापित करने का पहला प्रयास विफल हो गया। दूसरा प्रयास अगले वर्ष पुनः किया गया। जालन्धर आर्यसमाज ने १८८७ में कन्या पाठशाला खोलने का दूसरा प्रस्ताव पास किया। इसका काम शुरू करने की कोशिश की गयी, किन्तु अध्यापिकाओं तथा स्थान की दुर्लभता तथा छात्राओं के अभाव आदि विभिन्न कठिनाइयों से कन्या पाठशाला की गाड़ी आगे नहीं बढ़ सकी। इस बीच में लाला देवराज को उनकी माता ने सहयोग देकर इस काम में पहल की। उन्होंने ईसाई पाठशाला में काम करने वाली माई लाडो नाम की बहन को एक रुपया मासिक और खाना देकर अपने घर में छोटी–सी कन्या पाठशाला शुरू की। उन दिनों आर्यसमाज जालन्धर के बहुत से कार्यक्रम– सत्संग और समाज सुधार की प्रवृत्तियाँ इसी प्रकार लाला देवराज की माता के सहयोग से उनके घर पर शुरू हुई थीं। इस प्रकार तीसरी बार कन्या पाठशाला घर पर खोलने का प्रयास किया गया, किन्तु यह भी सफल नहीं हो सका। लाला मुंशीराम ने १८८९ में स्त्रीशिक्षा की ओर जनता का ध्यान आकृष्ट करने के लिए सद्धर्म प्रचारक के दूसरे अंक से 'अधूरा इन्साफ' नामक एक लेखमाला लिखनी शुरू की। इसमें नर–नारियों के समानाधिकार के आधार पर स्त्रीशिक्षा का प्रबल समर्थन किया गया था। इससे जनता में स्त्रीशिक्षा के प्रति कुछ दिलचस्पी बढ़ने लगी।

१८९० में कन्या पाठशाला खोलने का प्रयास अधिक उत्साह से किया गया। इसके लिए एक छोटा–सा कमरा किराये पर लेकर आठ छात्राओं के साथ इसका शुभारम्भ हुआ। दस रुपये का मासिक व्यय स्वीकृत किया गया। पण्डित श्रीपति नामक एक अध्यापक को दो रुपये मासिक पर और एक अध्यापिका को चार रुपया मासिक पर रखा गया। इस बार का चौथा प्रयत्न सफल हुआ। उस समय कन्या पाठशाला की क्या स्थिति थी और उसके लिए किस प्रकार प्रयास किये जाते थे इस पर श्री सत्यदेव विद्यालंकार द्वारा लिखित लाला देवराज की जीवनी के निम्नलिखित अवतरण से सुन्दर प्रकाश पड़ता है–

''एक बूढ़ा पण्डित पढ़ने के लिए आने वाली लड़कियों की प्रतीक्षा में दिन भर पाठशाला में बैठा रहता था और उसका संस्थापक लड़कियों को वहाँ भेजने के लिए उनके माता–पिता से बहस करता हुआ घर–घर घूमा करता था। कभी–कभी मकान का किराया और पण्डित का वेतन तक भुगताना कठिन हो जाता था...माताजी ने पण्डित को अपने यहाँ रहने का स्थान दे दिया। इससे उसके वेतन के एक हिस्से का सवाल हल हो गया, किन्तु शिक्षार्थी लड़कियों के मिलने का सवाल हल नहीं हुआ। श्री देवराज मिठाई, खिलौने आदि जेबों में भरकर बड़े सवेरे घर से निकल पड़ते थे और परिचित बन्धुओं की लड़कियों को लालच देकर विद्यालय में आने के उत्साहित करते हुए बहुत–से घरों का चक्कर लगा आया करते थे। एक दिन जो लड़की आती, दूसरे दिन उसका कोई सम्बन्धी आता, उसे उठा ले जाता और श्री देवराज को दस–पाँच जली–कटी सुना जाता। शहर में निकलने पर अपशब्दों के साथ–साथ आप पर रोड़े–पत्थर भी बरसाये जाते थे। जिस समाज में लड़कियों की शिक्षा का अर्थ उनको दुश्चरित्र बनाना और उनकी मर्यादा के सर्वथा विपरीत समझा जाता हो, उसमें उनकी शिक्षा के परिश्रम को सफल बनाना लोहे के चने से भी अधिक कठोर और दुष्कर कार्य था।''

उपर्युक्त कठिनाइयों के होते हुए भी चौथी बार का यह प्रयत्न लाला देवराज के दृढ़ संकल्प और अनथक उद्योग एवं उनकी माताजी के सहयोग से सफल हुआ। छात्राओं की संख्या बढ़ने लगी। १८९२ की जालन्धर आर्यसमाज की रिपोर्ट में लिखा है कि पाठशाला में ५५ कन्याएँ प्रविष्ट हो चुकी हैं और इस बात पर प्रसन्नता प्रकट की गयी है कि बहुत-सी कन्याओं ने आभूषण पहनना छोड़ दिया है। उस समय इस छोटी-सी पाठशाला को चलाने वाले व्यक्तियों की क्या महत्त्वाकांक्षा थी, वह इस रिपोर्ट के निम्नलिखित शब्दों से स्पष्ट होती है-

''क्या हम इसी पाठशाला से, जो प्राइमरी जमात तक शिक्षा देती है, सन्तुष्ट हैं?नहीं, हम इससे कहीं आगे बढ़ना चाहते हैं, क्योंकि हम जानते हैं कि दूसरी शिक्षा हमारे जीवन में आर्यत्व का संचार नहीं कर सकती है। इस बात को विचार कर आर्यसमाज कन्या महाविद्यालय स्थापित करना चाहता है और करेगा भी। विरोध रूपी तूफान के रहते हुए भी हम स्त्रीशिक्षा की नौका को उस पार पहुँचायेंगे।''

सम्भवतः यह रिपोर्ट लाला देवराज द्वारा लिखी गई थी। इसमें जिस तूफान का संकेत किया गया है, उसका कुछ परिचय देना उचित प्रतीत होता है। जिस समय जालन्धर कन्या पाठशाला की स्थापना की गयी थी, उस समय पंजाब में स्त्रियों की स्थिति शोचनीय थी। मध्यकाल से यहाँ कन्याएँ इतनी अशुभ, अवांछनीय और बुरी समझी जाती थीं कि उन्हें पैदा होते ही मार दिया जाता था। दहेज की प्रथा के कारण कन्याओं के पिताओं को वर ढूँढ़ने, और दहेज जुटाने तथा विवाह के समय की परेशानियों और अपमानों का घूँट पीना पड़ता था। उसकी अपेक्षा उस समय कन्याओं को पैदा होते ही मारना अच्छा समझा जाने लगा। गुरु गोविन्दसिंह ने अपनी रचनाओं में कुड़ीमारे (कन्या-वध करने वालों) की कड़ी निन्दा की थी। १६ वीं सदी में पंजाब में खत्री, बेदी, जाट, राजपूत, मोहियालों में इस कुप्रथा का प्रचार था। पंजाब पर अंग्रेजों का अधिकार होते ही सर जोन लारेंस द्वारा सबसे पहले प्रसारित की गयी तीन आज्ञाओं में एक थी- ''बेटी मत मारो।'' गाँवों में ब्रिटिश सरकार ने ऐसी पुलिस चौकियाँ स्थापित की थीं जहाँ लड़की के जन्म-मृत्यु की सूचना न देना एक अपराध माना जाता था। कन्याएँ परिवार के लिए भार-स्वरूप थीं, उनके लिए किसी प्रकार की शिक्षा न केवल निरर्थक, अपितु घातक समझी जाती थी। अतः पंजाब में स्त्रीशिक्षा का कट्टर विरोध किया जाता था। विरोधियों की इस दशा का चित्रण करते हुए जालन्धर कन्या महाविद्यालय की पत्रिका 'जलविद् सखा' में १९३४ में एक पुरानी छात्रा ने लिखा था-

''जब स्त्रीशिक्षा के प्रेमियों पर ईंटों और पत्थरों की वर्षा होती थी, जब लोग उन पर अनेक लाँछन लगाने में संकोच नही करते थे, जब कन्याओं की शिक्षा को पाप समझा जाता था, जब किसी कन्या के हाथ में अक्षरदीपिका (वर्णमाला सीखने की पहली पुस्तक) का होना इतना बड़ा अपराध माना जाता था कि उसकी सगाई तक छूट सकती थी, तब श्रद्धेय चाचाजी (लाला देवराज) ने कन्या महाविद्यालय की स्थापना करके बड़ी दूरदर्शिता का काम किया। १९०६ में जब मैं यहाँ पढ़ने के लिए आयी तो परिवार वालों ने जाति बहिष्कार का भय दिखाया था।''

उस समय स्त्रीशिक्षा का प्रचार करने वाले बेवकूफ, जाहिल और झक्की समझे जाते थे। कन्या पाठशाला के प्रथम अध्यापक पण्डित श्रीपति के बारे में लाला देवराज ने उनकी जीवनी में यह सत्य ही लिखा है- '' पण्डित श्रीपति ने कन्या-शिक्षा का कार्य तब आरम्भ किया था जब स्त्रीशिक्षा का नाम लेने वालों को मूर्ख, पागल, धर्मनाशक और देश को तबाह करने वाला कहा जाता था।''

स्त्रीशिक्षा के विरोधी वातावरण के कारण उस समय कन्या पाठशाला में लड़कियों को भरती करने के लिए बड़े प्रबल प्रयास करने पड़ते थे। कहा जाता है कि लाला देवराज अपनी जेबों में किशमिश, काजू, बादाम आदि मेवे भरकर लोगों के घरों में जाकर माँ-बाप को समझा-बुझाकर और कन्याओं को मेवे के लालच में स्कूल में लाया करते थे। कई बार ऐसा भी होता था कि पिता अपनी कन्या को स्कूल भेज देता था, किन्तु उसका दादा और ताऊ स्कूल में आकर लड़-झगड़ कर उस कन्या को घर वापिस ले जाता था। कई ऐसी घटनाएँ भी हुईं कि किसी कन्या की सगाई इसलिए टूट गयी कि उसने कन्या पाठशाला में पढ़ना शुरू कर दिया था।

कन्या महाविद्यालय के आरम्भिक वर्षों में विपक्षियों के तीव्र विरोध के बावजूद लाला देवराज अपने स्त्रीशिक्षा के प्रसारकार्य के पथ से तनिक भी विचलित नहीं हुए। उन्हें इस विरोध से नवीन प्रेरणा तथा उत्साह मिला। पाठशाला की आय को बढ़ाने के लिए उन्होंने रद्दी फण्ड की योजना शुरू की। इसका यह आशय था कि लोग अपने घरों की रद्दी इस संस्था को दे दिया करें जिसे बेचकर कुछ मासिक आय प्राप्त की जाय। लाहौर से प्रकाशित होने वाले अंग्रेजी दैनिक पत्र 'ट्रिब्यून' के १६ मार्च, १८९२ के अंक में रद्दी फण्ड के शुरू

करने का समाचार छपा। ६ जुलाई के अंक में इसी पत्र में यह खबर छपी कि लाला देवराज ने इसे महाविद्यालय का रूप देने की योजना बनाई है। इस योजना को उस समय के सुप्रसिद्ध शिक्षा-शास्त्रियों, लोकनेताओं और शिक्षित व्यक्तियों के पास उनकी सम्मति और सुझाव के लिए भेजा गया। प्रायः सभी लोगों ने इस योजना को समाज एवं देश के लिए हितकर समझा, इसे पसन्द किया और इस बारे में अपने सुझाव भेजे। इनके अनुसार इस योजना को अन्तिम रूप दिया गया और जनता के सम्मुख प्रस्तुत करके धन-संग्रह की अपील की गयी। इस योजना में कन्याओं को वैदिक आदर्शों के अनुसार शिक्षा देने की व्यवस्था थी। लाला देवराज का विचार था कि उन्हें इस कार्य के लिए २५ हजार रु. की आवश्यकता होगी। इसके लिए उन्होंने आर्यसमाजों के वार्षिक उत्सवों पर धन-संग्रह की योजना बनायी।

इस योजना के प्रमुख सूत्रधार लाला देवराज थे, किन्तु लाला मुंशीराम उनके साथ सम्बन्ध रखते थे। उन्होंने उसके प्रबन्ध के लिए कन्या महाविद्यालय मुख्य सभा नामक एक संगठन बनाया और १८९६ में इस सभा की रजिस्ट्री करा दी गयी।

आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में महिलाएँ पुरुषों के साथ कन्धे से कन्धा लगाकर कार्य कर रही हैं अनेक क्षेत्र में तो वे पुरुषों से आगे निकल गयी हैं। नारी जाति की इस प्रगति का मुख्य आधार शिक्षा ही है। यह ध्यातव्य है कि नारी के लिए शिक्षा के द्वार अनायास नहीं खुल गए। अन्य सामाजिक सुधारों की भाँति इसका श्री गणेश आर्यसमाज द्वारा ही किया गया। आज के नौजवान सोच भी नहीं सकते कि तत्समय में आर्यसमाज के नेताओं ने किन अकथनीय विपदाओं का सामना करते हुए इस महान् कार्य का शुभारम्भ करने में सफलता प्राप्त की। आज के युग को इस महान् योगदान के लिए उनका ऋणी होना चाहिए।

❑❑❑ – (आर्यसमाज के सप्त खण्डीय इतिहास से उद्धृत)

जैसे पुरुषों को व्याकरण, धर्म और अपने व्यवहार की विद्या न्यून से न्यून अवश्य पढ़नी चाहिये, वैसे स्त्रियों को भी व्याकरण, धर्म, वैद्यक, गणित, शिल्प विद्या तो अवश्य ही सीखनी चाहिये। क्योंकि इनके सीखे बिना सत्याऽसत्य का निर्णय, पति आदि से अनुकूल वर्तमान यथायोग्य सन्तानोत्पत्ति, उनका पालन, वर्धन और सुशिक्षा करना, घर के सब कार्यों को जैसा चाहिये वैसा करना कराना, वैद्यकविद्या से औषधवत् अन्न-पान बना और बनवाना नहीं कर सकती।

– महर्षि दयानन्द सरस्वती (सत्यार्थ प्रकाश पृ.७६)

संरक्षक मण्डल – सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री आर.डी. गुप्त, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष, श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभाआर्या,गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर एवं

स्वामी (डॉ.) [illegible] सरस्वती [illegible] | स्वामी [illegible] सरस्वती [illegible] | स्वामी [illegible] सरस्वती दिल्ली | श्रीयुत् राव हरिश्चन्द्र नागपुर | श्री [illegible] आर्य [illegible] | श्री [illegible] मित्तल [illegible] | श्री [illegible] आर्य [illegible] | श्री अरुण कुमार गुप्ता [illegible]

प्रो. आर.के. एरन जयपुर | श्री [illegible] सराफ [illegible] | श्री [illegible] आर्य कोलकाता | श्री कृष्ण चोपड़ा यू.के. | श्री नरेश कुमार [illegible] नई दिल्ली | श्रीमती पुष्पा गुप्ता जयपुर | श्री विनय तापड़िया जयपुर | श्री वीरेन्द्र मित्तल जयपुर

श्री मोती लाल आर्य [illegible] | "[illegible]" श्रीमती सरोज वर्मा जयपुर | प्रो. आई. वी. [illegible] [illegible] | श्री राजकुमार गुप्ता एवं श्रीमती सरला गुप्ता जयपुर | श्री विकास गुप्ता [illegible] | श्री एम. विनोद कुमार टाक बैंगलुरु | डॉ. मोतीलाल शर्मा जयपुर

वेदों में चिकित्सा विज्ञान की अवधारणा पर दार्शनिक एवं वैज्ञानिक अध्ययन

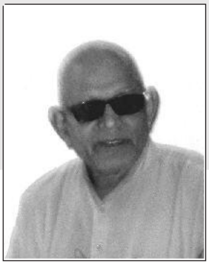

स्वामी शारदानन्द सरस्वती

संसार के पुस्तकालय में वेद केवल प्राचीनतम ग्रन्थ ही नहीं हैं वरन् उनमें ज्ञान विज्ञान की विविध विधाओं में अन्तर्निहित ज्ञान का असीम भंडार भी भरा हुआ है। इसलिए स्वामी दयानन्द सरस्वती की मान्यता है कि 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।' सब सत्य विद्याओं में आयुर्विज्ञान अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रखता है, यही कारण है कि ऋग्वेद एवं अथर्ववेद में आयुर्विज्ञान संबंधी सैंकड़ों मन्त्र हैं। हमारा शरीर ही नहीं वेदों के अनुसार संपूर्ण सृष्टि प्रकृति द्वारा निर्मित है।

अदितिर्द्योदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः।
विश्वे देवा अदितिः पञ्जना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्।। अथर्व-७.६.१

अर्थात् प्रकृति ही प्रकाशमान-सूर्य, अदिति(प्रकृति) ही अन्तरिक्ष, प्रकृति ही माता, वही पिता और वही हमारा पुत्र है। वही सबकी जनिता अर्थात् जन्म देने वाली तथा वही उत्पन्न होने वाली भी है।

अतः यह स्वाभाविक ही है कि जब संपूर्ण जगत् ही प्रकृति से रचा हुआ है तो यदि उसमें कहीं कोई विकृति उत्पन्न होती है तो वह भी प्रकृति से प्राप्त प्राकृतिक साधनों से ही सरलता से दूर की जा सकती है।

प्रकृति क्या है और उससे सृष्टि कैसे उत्पन्न होती है इसका वर्णन सांख्य दर्शन में इस प्रकार हुआ है-

'सत्वरजस्तमसा साम्यावस्था प्रकृतिःप्रकृतेर्महान्,महतोऽहंकारोऽहंकरात् पंचतन्मात्राण्यु भयमिन्द्रिय पंचतन्मात्रेभ्यः स्थूल भूतानि पुरुष इति पंचविंशतिर्गणः अर्थात्-सत्व (प्रकाश, बहना, प्रकाश) रज (द्रवत्व, स्तब्धपन, गति) तम(सरलपन , ठोसपन, स्थिति)रूप शक्तियाँ हैं। ऐसी शक्ति रूपों की समावस्था, निश्चेष्ठावस्था, प्रकट रूपावस्था को प्रकृति कहते हैं। प्रकृति से महतत्त्व, महतत्त्व से अहंकार, अहंकार से पाँच सूक्ष्म भूत तन्मात्रायें तथा उनसे पाँच स्थूलभूत, स्थूलभूतों से पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ पाँच कर्मेन्द्रियाँ तथा मन उत्पन्न होता है। चेतन पुरुष-इनसे भिन्न है। इन २५ तत्त्वों का जानना, समझना विवेक में आवश्यक है।'

सृष्टि उत्पत्ति विषय को तैत्तिरीयोपनिषद में इस प्रकार कहा है- तस्माद्वा एतस्मादात्मन आकाशः सम्भूतः। आकाशाद्वायुः। वायोरग्निः। अग्नेरापः। अद्भ्यः पृथिवी। पृथिव्या ओषधयः ओषधीभ्योन्नम्। अन्नाद्रेतः। रेतसः पुरुषः। स वा एष पुरुषोन्नरसमयः। तस्येदमेव शिरः अयं दक्षिणः पक्षः। अयमुत्तरः पक्षः अयमात्मा इदं पुच्छ प्रतिष्ठा।

निश्चय इस सत्यं ज्ञानमन्तं ब्रह्म से आकाश उत्पन्न हुआ। आकाश से वायु, वायु से अग्नि,अग्नि से जल, जल से पृथ्वी, पृथ्वी से औषधि, औषधि से अन्न, अन्न से वीर्य और वीर्य से पुरुष, इसलिए यह पुरुष अन्नरसमय है। उसका यह शिर है। यह शरीर का दाहिना अंग है। यह बायाँ अंग है यह धड़ है। इससे यह संकेत मिलता है कि हमें स्वस्थ रहने के लिए आकाश-वायु-अग्नि-जल-पृथ्वी तत्त्वों के मध्य सदैव सन्तुलन बनाये रखना होगा। शरीर में विकृति का उत्पन्न होना यह सिद्ध करता है कि इन पाँच मुख्य तत्त्वों के निश्चित अनुपात में कहीं विकृति हो गई है। इनमें आकाश ही सबसे विस्तृत है तथा सृष्टि रचना में सर्वप्रथम उसी की समय के साथ उत्पत्ति होती है। आकाश सर्वत्र फैला हुआ है, अनन्त है, सम्पूर्ण सृष्टि आकाश में ही आश्रय पाती है। अतः स्वस्थ रहने के लिए प्राणियों को अधिक समय खुले आकाश में ही व्यतीत करना चाहिए। साथ ही आकाश को सुगन्धित रोगाणु को हनन करने वाले यज्ञीय पदार्थों से शुद्ध भी बनाये रखना चाहिए । खुले आकाश और सूर्य के प्रकाश में शरीर को विटामिन-डी वैसे ही प्राप्त हो जाता है। छोटे-छोटे कमरों में रहना अस्वस्थता को जन्म देता है। आकाश के बाद वायु की आवश्यकता होती है। वायु ही हमारे जीवन का मुख्य आधार है। प्राण वायु के अभाव में जीवन की कल्पना ही असंभव है। इसलिए वेद में कहा है-उत वात पितासि नः उत भ्रातोत नः सखा। स नो जीवातवे कृधि। ऋ.१०.१८६.२ और यह वायु हमारा पिता के समान पालन करने वाला भाई के समान पोषण करने वाला तथा

मित्र के समान कल्याणकारी है। वही हमें जीवित बनाये रखता है। वायु हृदय रोग को दूर करने में औषध कार्य भी करता है।

वात आ वातु भेषजं शम्भु मयोभु नो हृदे ।प्र ण आयूंषि तारिषत्। ऋ १०.१८६.१।

वायु औषधि है जो हमारे हृदय के लिए आनन्ददायक है। उसको प्राप्त कराता है और हमारी आयु को बढ़ाता है। वायु सर्वत्र फैली हुई है, तथा उसे दो भागों में बाँटा जा सकता है। पहली शुद्ध वायु जो श्वास लेने के योग्य हो और दूसरी अशुद्ध वायु जो श्वास क्रिया के सर्वथा अनुपयुक्त हो। ऋ १०.१३७.२ कहता है–

द्वाविमौ वातौ वात आ सिन्धोरा परावतः। दक्षं ते अन्य आ वातु परान्यो वातु यद्रपः।।

वायु सर्वत्र फैली हुई है। शुद्ध वायु हमें आरोग्यता और बल प्रदान करती है तथा दूसरी वायु हमारे शरीर की अशुद्धियों को बहाकर हमसे दूर ले जाती है।

ऋ.१०.१३७.३ में वायु को 'विश्व भेषज' कहा गया है। यह भी बताया गया है कि वायु निमोनिया, हृदय, तपेदिक आदि रोगों में औषध का कार्य करता है। वर्तमान काल में वायु अत्यधिक अशुद्ध हो गई है। बढ़ते हुए यातायात के साधनों तथा कारखानों से निकलते हुए जहरीले धुएँ के कारण कुछ बड़े शहरों में तो श्वास लेने में भी कठिनाई होने लगी हैं। वेदों में हवा को शुद्ध करने के लिए यज्ञों की व्यवस्था की है। इस विषय पर कई पुस्तकें लिखी गईं हैं।

वेदों में सूर्य की किरणों के द्वारा भी रोगनिवृत्ति का वर्णन है। अथर्ववेद २.३२.१ में कहा गया है–

उद्यन्नादित्यः क्रिमीन्हन्तु निम्रोचन्हन्तु रश्मिभिः। ये अन्तः क्रिमयो गवि।।

उदय होता हुआ सूर्य कीटाणुओं को मार डाले। अस्त होता हुआ सूर्य भी अपनी किरणों से कीटाणुओं को मारे जो कीड़े पृथ्वी के अन्दर हैं उन्हें भी मार डाले।

उत्पुरस्तात्सूर्य एति विश्वदृष्टो अदृष्टहा। दृष्टांश्च घ्नन्नदृष्टांश्च सर्वांश्च प्रमृणन्क्रिमीन्।। अथर्व ५.२३.६

सबके द्वारा देखा गया, अगोचर पदार्थों में गति वाला सूर्य दिखते हुए और न दिखते हुए सब कीड़ों को अवश्य मारता हुआ और मिटाता हुआ पूर्व दिशा में उदय होता है।

वेदों में जल चिकित्सा का भी विस्तृत वर्णन है–

आपोहिष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे। अथर्व – १.५.१

भावार्थ(आपः) हे जल! (हि) निश्चय करके(मयो भुवः) सुख देने वाले (स्व) होते हो(ताः) सो तुम(नः) हमको (उर्जे) पराक्रम व अन्न के लिए (मयो) बड़े–बड़े(रणाय) संग्राम के लिए (चक्षसे) देखने के लिए (दधातन) पुष्ट करो।

अथर्व १.५.४ में कहा गया है– 'अपो याचामि भेषजम्।'

मैं जल धाराओं से औषध को माँगता हूँ। 'आपः सर्वस्य भेषजीस्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम्।' ऋ.१०.१३७.६

जल निश्चय ही भेषज रूप है। जल रोग को दूर करने वाला है। जल सब प्राणियों का इलाज करे। पृथ्वी तो हम सबका आधार स्थल ही है। इसी पर हमारा जन्म होता है, इसी पर हम नानाविध काम करते हैं, इसी पर उत्पन्न नाना वनस्पतियों से हमारा जीवन चलता है। क्रमश ....

– दयानन्द विद्यापीठ, आबूरोड़

आँखें

एक प्यारी सी सुन्दर सी लड़की थी। परन्तु वह देख नहीं सकती थी क्योंकि अंधी थी। वह संसार भर से प्रतिक्रिया–रूप नफरत करती थी। उसके नजदीक केवल उसका मित्र था, जो उसका अतीव ख्याल रखता था। वह लड़की केवल उसे ही चाहती थी। वह अपने मित्र से कहती थी कि अगर उसकी आँखें होतीं तो वह उससे विवाह कर लेती। एक दिन किसी ने उसे अपनी आँखें दान कर दीं। उसका आपरेशन हुआ और वह इस सुन्दर संसार को देख पाने लगी। उसके मित्र ने उससे पूछा कि क्या वह अब उससे विवाह करेगी?लड़की ने मित्र की ओर देखा, उसे धक्का लगा क्योंकि उसका मित्र अंधा था। अंत में लड़की ने अंधे मित्र से विवाह करने से मना कर दिया। मित्र बड़ा दुखी हुआ। वह दुखी मन से वहाँ से चला गया। दूसरे दिन लड़की को मित्र का पत्र मिला – लिखा था 'मेरी आँखों का ध्यान रखना' –(संकलित)

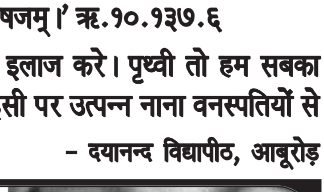

सूचना तकनीक के नवाचार और हिन्दी भाषा-साहित्य

आज का युग सूचना तकनीक का युग है,जीवन का शायद ही कोई क्षेत्र बचा हो जिसमें इसका प्रवेश न हो गया हो। सूचना तकनीक के पक्ष और विपक्ष में बहुत कुछ कहा जाता रहा है,लेकिन उस सबके विस्तार में जाने का यह उपयुक्त अवसर नहीं है, इसलिए हम केवल इतना संकेत करके आगे बढ़ना चाहेंगे कि जहाँ इसने हमारे जीवन को बहुत सुगम बनाया है, वहीं इसके कारण हमारे जीवन में कुछ विकृतियाँ भी आई हैं। हर नई चीज अपने साथ सभी तरह के प्रभाव लाती है,यह भी लाई है,और नई चीज ही क्यों, जीवन में ऐसा क्या है जिसका केवल उजला ही पक्ष हो। इसलिए,हम सूचना तकनीक के उजले पक्ष में अपनी बात आगे बढ़ाना चाहेंगे, फिर जैसे-जैसे जरूरत महसूस होगी ,इसके नकारात्मक पक्षों की चर्चा भी करते चलेंगे।

कुछ समय पहले एक अमरीकी पत्रकार थॉमस एल फ्रीडमैन की एक किताब आई थी, 'द वर्ल्ड इज फ्लेट'।

किताब अत्यधिक चर्चा में रही। अब तो फ्रीडमैन की एक और किताब भी आ गई है, 'हॉट, फ्लैट एंड क्राउडेड'। जिन मित्रों ने फ्रीडमैन की इस पहले वाली किताब को पढ़ा है वे जानते हैं कि उन्होंने किस रोचक तरीके से दुनिया में आए बदलावों को रेखांकित किया है। दरअसल, हमारे चारों तरफ इतना कुछ घटित होता रहता है और हम सहजता से उसके आदी होते चलते हैं कि उसकी तरफ हमारा ध्यान ही नहीं जाता। हम उसकी प्रक्रिया की बजाय परिणिति तक अपने आप को सीमित रखते हैं। जो बहुत अधिक तकनीक प्रिय नहीं हैं, वे भी तकनीक में आए बदलावों और उसकी प्रगति से प्रभावित और लाभान्वित तो होते ही हैं। आप दस पन्द्रह वर्ष पहले की दुनिया को ही याद करें जब आप जरूरी खबर तार से भेजा करते थे और लोकल टेलीफोन करना भी खासा मुश्किल हुआ करता था या ऐसी ही और बहुत सारी बातें थीं। फिर याद कीजिए आज की स्थितियों को, जब आप पलक झपकते ही कहीं भी, न केवल पूरे देश में बल्कि पूरी दुनिया में टेलीफोन कर लेते हैं, उससे भी आगे मोबाइल से सम्पर्क साध लेते हैं, या बीकानेर में रहते हुए जम्मू से कन्याकुमारी का रेल टिकट खरीद लेते हैं, या चौबीस घण्टों में से किसी भी समय बैंक के एटीएम से रुपये निकाल लेते हैं, या अपने कम्प्यूटर से दुनिया के किसी भी हिस्से में ईमेल कर सकते हैं और आपकी ई मेल लगभग उसी वक्त दुनिया के दूसरे छोर में डिलीवर भी हो जाती है.......ऐसी अनेकानेक बातें हैं। कहना गैर जरूरी है कि ये सब सूचना तकनीक की वजह से है। तो फ्रीडमैन की जिस किताब का जिक्र मैंने अभी किया,उसमें दुनिया में सूचना तकनीक की वजह से आए बदलावों का बड़ा रोचक और आँखें खोलने वाला वर्णन पढ़ने को मिलता है।

इस किताब से फ्रीडमैन ने दुनिया की शक्ल बदलने वाले तीन नवाचारों की चर्चा की है-

१. पर्सनल कम्प्यूटर, जिसने हमें डिजीटल कण्टेण्ट का सर्जक बनाया।

२. इण्टरनेट और वर्ल्ड वाइड वेब (www) जिसने हमें यह सुविधा दी हम अपनी विषयवस्तु को पूरी दुनिया में निःशुल्क कहीं भी ले जा सकते हैं और

३. नब्बे के दशक में हुई सॉफ्टवेयर क्रान्ति जिसने सारे कम्प्यूटरों को एक-रूप किया। आप चाहें या न चाहें, ये चीजें आपकी जिन्दगी में न केवल घुस चुकी हैं, उसका अविभाज्य अंग भी बन चुकी हैं।

मैंने यहाँ फ्रीडमैन के बताये जिन तीन नवाचारों का उल्लेख किया, उनके केन्द्र में कम्प्यूटर है।

आपको स्मरण होगा, पहले कम्प्यूटर बहुत बड़े हुआ करते थे, उनकी स्मृति बहुत कम होती थी और उनके नाज नखरे भी कम नहीं होते थे। इस तरह वे आम आदमी के लिए सुलभ नहीं थे। केवल बड़े संस्थानों में ही प्रयुक्त होते थे। लेकिन जैसा तमाम तकनीकों के साथ होता है, आहिस्ता-आहिस्ता इनका स्वरूप बदला और सुलभता बढ़ी। अब पिछले कुछ बरसों से तो भारत में भी कम्प्यूटर का प्रयोग आम हो चला है। शिक्षा के साथ इसके जुड़ाव ने भी इसे घर घर तक पहुँचाया है। कम्प्यूटर जो पहले केवल सांस्थानिक उपयोग की वस्तु था, अब सही अर्थों में पर्सनल हो चला है। कभी कभी मुझे लगता है कि आपके हाथ में जो छोटा सा यंत्र मोबाइल नाम का होता है, वह भी कम्प्यूटर का लघु संस्करण ही है। अगर इस बात को स्वीकार कर लें तो फिर कम्प्यूटर की लोकप्रियता आपको और भी बढ़ी-चढ़ी दिखाई देगी। अब यह कम्प्यूटर, जिसका लम्बे समय तक हममें से ज्यादातर लोग प्रयोग महज एक इलेक्ट्रोनिक टाइपराइटर की तरह करते रहे हैं, अब लगभग सब कुछ करने लगा है, या हम

उससे करवारने लगे हैं। इसी को फ्रीडमैन ने 'डिजिटल कण्टेण्ट का सृजन' नाम दिया है। जो लोग कम्प्यूटर पर लिखते, तस्वीर बनाते, संगीत रचते या चित्रों को-पत्रिकाओं को सम्पादित करते हैं वे जानते हैं कि यह तकनीक उनके काम को कितना आसान करती जा रही है। लेकिन इतना आगे बढ़ने से पहले हम जरा भाषा की बात कर लें।

भाषा की बात करें तो यह जिक्र आये बिना नहीं रहेगा कि कम्प्यूटर का जन्म पश्चिम में हुआ है और उस पर ज्यादा काम भी अंग्रेजी में ही किया जा सकता है-ऐसी धारणा है। यह धारणा कुछ समय पहले तक सही थी। कोई दस बरस पहले तक कम्प्यूटर पर हमारी अपनी भाषा यानी हिन्दी में काम करना बहुत कठिन था। वैसे यहीं यह बात साफ कर दूँ कि कम्प्यूटर की अपनी कोई भाषा नहीं होती है, कम्प्यूटर की यानी हार्डवेयर की। भाषा की जरूरत साफ्टवेयर को होती है पर यह प्रौद्योगिकी भी हमारी पारम्परिक भाषा नहीं समझती। इस प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल के लिए हर भाषा को शून्य और एक की, एक भिन्न भाषा में जिसे बाइअनरी भाषा कहा जाता है, रूपान्तरित होना पड़ता है। क्योंकि इस तकनीक का जन्म और विकास पश्चिम में हुआ और वहीं इसका अधिक प्रयोग भी प्रारम्भ हुआ, इसलिए शुरू-शुरू में इसका रिश्ता हिन्दी के साथ नहीं बना। लेकिन तकनीक की दुनिया व्यवसाय की भी दुनिया है और व्यवसाय करने वाले बहुत बड़े हिन्दी भाषी बाजार की अनदेखी नहीं कर सकते, इसलिए सम्भवतः तकनीक हिन्दी की तरफ मुड़ी और झुकी, तथापि मैं इसे हिन्दी के महत्व और महानता के रूप में कतई नहीं देखता, यह शुद्ध व्यावसायिक मामला रहा। लेकिन यह मानने में भी मुझे संकोच नहीं है कि इन व्यावसायिक प्रयासों ने अंततः हमारी भाषा का और हमारा उपकार किया। अब स्थिति यह है कि आज लगभग सारे महत्वपूर्ण और बहुप्रयुक्त होने वाले साफ्टवेयर हमारी अपनी भाषा हिन्दी में सुलभ हैं। आप जानते हैं कि साफ्टवेयर की दुनिया में माइक्रोसॉफ्ट का वर्चस्व है। उसने अपने करीब करीब सारे लोकप्रिय सॉफ्टवेयर हिन्दी में भी जारी कर दिए हैं जिससे हम गैर तकनीकी लोग तो जितना भी काम चाहें हिन्दी में कर सकते हैं। माइक्रोसॉफ्ट की देखा-देखी अन्य कम्पनियों ने भी अपने साफ्टवेयर हिन्दी में निकाल दिए। रही-सही कसर उन अनेक लोगों ने पूरी कर दी जो सेवा और समर्पण के भाव से तकनीक और हिन्दी को निकट लाने में लगे हुए हैं और ऐसे में अनेक लोगों के साथ अनायास ही मुझे रवि रतलामी, बालेन्दु दाधीच, जयप्रकाश मानस के नाम याद आ रहे हैं। इन लोगों ने बिना किसी व्यावसायिक स्वार्थ के तकनीक का रिश्ता हिन्दी से मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की और कर रहे हैं। इन्हीं के साथ अनेक सरकारी-अर्द्ध सरकारी उपक्रमों की भूमिका को भी याद किया जाना चाहिए, जैसे सी डैक या भारत सरकार का सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय।

यही आपको यह भी याद दिला दूँ कि लम्बे समय तक कम्प्यूटर पर हिन्दी के प्रयोग में एक बड़ी बाधा रही है- हिन्दी के मानक कुंजीपटल के अभाव की तथा हिन्दी फॉण्ट्स की, हिन्दी में अंग्रेजी के qwerty की तरह कोई एक सर्वमान्य कुंजीपटल का न होना तथा हिन्दी फॉण्ट्स की सर्व स्वीकृति का न होना जो बड़े कष्ट का कारण रहा है। अगर मैंने अपने कम्प्यूटर पर किसी खास फॉण्ट में कुछ टाइप किया और चाहा कि उस फाइल को आपको भेज दूँ या आपके कम्प्यूटर पर उसे पढ़ लूँ तो अनेक बार यह सम्भव नहीं हुआ क्यों कि वह फॉण्ट आपकी मशीन में स्थापित नहीं था। अब शनैःशनैः यह समस्या खत्म हो गई है। आपको बताऊँ कि इस शताब्दी के पहले दशक का सबसे बड़ा उपहार है यूनीकोड। यह यूनीकोड आस्की और इस्की के मीलों आगे की चीज है। इसके आने से फाण्ट्स की सारी समस्या ही खत्म हो गई है। लेकिन पहले जरा यह जान लें कि यह आस्की और इस्की क्या है? कम्प्यूटर की दुनिया में एक बहुत लोकप्रिय भाषा व्यवस्था है अमेरिकन स्टेण्डर्ड कोड फॉर इंफर्मेशन इण्टरचेंज, जिसे संक्षेप में ASCII7 नाम से जाना जाता है। यह भाषा सात अंकों पर आधारित है इसलिए इसके नाम के साथ ७ जुड़ा है। ७ बाइनरी डिजिट्स से कुल १२८ संयोजन सम्भव होते हैं, इसका प्रयोग रोमन लिपि के लिए होता है। इसी तरह भारतीय भाषाओं के भण्डारण के लिए इंडियन स्टैन्डर्ड कोड फॉर इंफर्मेशन इण्टरचेंज यानी (ISCII 8) प्रयुक्त होती है। इन दोनों कम्प्यूटर भाषाओं का प्रयोग बहुत लम्बे समय से होता रहा। अंग्रेजी में तो ठीक चला, लेकिन भारतीय भाषाओं के प्रयोग में इस्की ८ के चलते अनेक परेशानियाँ दरपेश आती रहीं। उन्हीं तमाम समस्याओं को दूर किया है यूनीकोड व्यवस्था ने। यूनीकोड व्यवस्था १६ बाइनरी डिजिट्स पर आधारित है,इसमें ६५५३६ संयोजन संभव हैं। अब अगर आपने यूनीकोड में कुछ टाइप किया है तो किसी को उसे पढ़ने के लिए फॉण्ट डाउनलोड करने की जरूरत नहीं, मशीन में वे फॉण्ट हों, इसकी

भी जरूरत नहीं, तो फाण्ट्स की समस्या तो एक ही झटके में खत्म हो गई है। बस एक छोटी-सी शर्त होती है इस यूनीकोड के इस्तेमाल के लिए, और वह यह कि आपका कम्प्यूटर बहुत पुराना न हो। यानी वह कम से कम पी-४ हो। रही-सही जो दिक्कत हम हिन्दी वालों के लिए की बोर्ड की थी,उसे माइक्रोसाफ्ट ने वेव दुनिया के साथ मिलकर जो एक इण्डिक इनपुट मेथड एडिटर (इण्डिक आईएमई) का बोर्ड विकसित किया, उसने खत्म कर दिया, इस मुफ्त में डाउनलोड किए जा सकने वाले सॉफ्टवेयर में हिन्दी के कई की बोर्ड हैं और साथ ही है एक ध्वन्यात्मक की बोर्ड भी, जिसके द्वारा आप रोमन के मध्य से हिन्दी टाइप कर सकते हैं, यानी आपको अगर राम टाइप करना है तो करें आर ए एम। फिर तो जो आपने अपने कम्प्यूटर पर टाइप किया है उसे पूरी दुनिया में कहीं भी कोई भी, अपने कम्प्यूटर पर पढ़ सकता है, ठीक उसी तरह जैसे अब तक अंग्रेजी को पढ़ा जाता रहा है।

इस तरह यह धारणा अब खत्म हो जानी चाहिए कि कम्प्यूटर पर हिन्दी में काम नहीं हो सकता। जैसा मैंने कहा, कुंजी पटल ओर फॉण्ट्स की समस्या तो लगभग खत्म हो गई है। वैसे इस दिशा में और भी काम लगातार होते जा रहे हैं, जिनसे कम्प्यूटर पर हिन्दी में काम करना और अधिक सुगम हो जायेगा। ऐसे ही एक प्रयास की चर्चा यहाँ करना उचित होगा। आप जानते ही हैं, अंग्रेजी में स्पीच टू टेक्स्ट के लिए बहुत पहले से साफ्टवेयर उपलब्ध है। यानी आप माइक के सामने कुछ बोलिये, आपका कम्प्यूटर उसे हूबहू टाइप कर देगा। यह सुविधा अब तक हिन्दी में सुलभ नहीं थी। अभी हाल ही में पुणे की सी-डेक ने इसके लिए हिन्दी में भी साफ्टवेयर बाजार में उतार दिया है। यानी अब तो यह भी जरूरी नहीं है कि आपको टाइप करना भी आता हो। आपको तो बस माइक के आगे बोलना है। स्वतः टाइप हो जायेगा।

यही, थोड़ा विषयान्तर करके मैं कम्प्यूटर पर लिखने या टाइप करने के एक बड़े सुख की चर्चा करना चाहूँगा । जब आप हाथ से कुछ लिखते हैं या पुराने यांत्रिक टाइपराइटर पर कुछ टाइप करते हैं और उसमें कुछ गलती हो जाती है या किसी वजह से से उस आलेख में परिवर्तन करना चाहते हैं, तो कहना अनावश्यक है कि आपको दुबारा सब कुछ करना होता है। कम्प्यूटर आपको यह सुविधा देता है कि आपने जो लिखा है, यानी टाइप किया है, उसे जैसे भी चाहें संशोधित कर लें या परिवर्तित कर लें। अब अगर मैं चाहता हूँ कि मेरे एक लेख का पहला पैराग्राफ अंत में होना चाहिए, तो कम्प्यूटर पर यह बहुत आसान है। अक्षर छोटे बड़े करना, उन्हें बदलना, इटैलिक या बोल्ड करना, जो कुछ लिखा है उसका रूपाकार बदलना-ये सब इतनी आसानी से होता है कि क्या कहें, मुझे तो लगता है कि कम्प्यूटर लिखने पढ़ने वालों के लिए एक वरदान है।

अंग्रेजी के मामले में कम्प्यूटर में पहले से बहुत सारी सुविधाएँ उपलब्ध हैं, मसलन अपने लिखे की वर्तनी की जाँच आप बहुत असानी से कर सकते हैं, न केवल जाँच, बल्कि छोटी मोटी गलती तो कम्प्यूटर खुद ही सुधार देता है। जहाँ उसे संशय होता है, उस शब्द विशेष को रेखांकित करके वह आपका ध्यान आकृष्ट कर देता है । न केवल इतना जिस शब्द पर उसे संशय है, उस शब्द के अनेक विकल्प भी वह आपको सुलभ करा देता है और जैसे तो इतना ही काफी न हो, आपके लिखे वाक्य की वैयाकरणिक संरचना को भी वह देखता परखता है और आपको सुझाव देता है।

मुझ जैसे हिन्दी में काम करने वाले बहुत व्यथित होते थे कि यह सुविधा केवल अंग्रेजी में क्यों है?लेकिन यह बात अब पुरानी हो गई है। अब हिन्दी में भी लगभग सारी सुविधाएँ उपलब्ध हैं। आप वर्तनी जाँच सकते हैं। चाहें तो एक मुफ्त में उपलब्ध छोटे से सॉफ्टवेयर की मदद से किसी शब्द विशेष का हिन्दी/अंग्रेजी पर्याय जान सकते हैं और जैसे इतना भी काफी न हो, अब तो लोगों ने अनुवाद करने वाले साफ्टवेयर भी सुलभ करा दिए हैं। निश्चय ही कोई भी मशीनी-अनुवाद, वैसा सर्वांगपूर्ण नहीं हो सकता जैसा आप करते हैं, लेकिन उससे मदद तो ली जा सकती है। यहीं यह भी बताता चलूँ कि अभी मैंने जिन अच्छे कामों का जिक्र किया, उनमें से ज्यादातर हिन्दी सेवी लोगों के निजी प्रयत्नों के परिणाम है अर्थात् निजी और गैर व्यावसायिक, मसलन रतलाम जैसे छोटे शहर के रवि रतलामी ने हिन्दी वर्तनी जाँचक बनाने का बड़ा काम किया, तो उदयपुर के प्रख्यात शिक्षाविद् स्वर्गीय दयालचन्द्र जी सोनी के पौत्र ने वह छोटा सा सॉफ्टवेयर 'शब्दकोश'बनाया जो हिन्दी से अंग्रेजी और अंग्रेजी से हिन्दी पर्याय सुलभ कराता है, यह बहुत बडी बात कि सारे काम अव्यावसायिक आधार पर किए गए । बहुत सारे काम गूगल जैसे व्यावसायिक संस्थानों ने भी किए, माइक्रोसाफ्ट ने किए और निश्चय ही उन्होंने इन कामों से पैसा भी कमाया, लेकिन इस बात से भला कौन मना करेगा कि इनसे हमारी भाषा को बहुत सहायता मिली है। ऐसे ही सारे प्रयत्नों का परिणाम है कि आज हिन्दी में कोई भी काम कम्प्यूटर पर संभव है। आप हिन्दी में ई मेल भी भेज सकते हैं, पा सकते हैं। इसी तकनीक का फल हमें अपने मोबाइल जैसे उपकरणों में भी हिन्दी के प्रयोग के रूप में मिल रहा है।

कम्प्यूटर और इण्टरनेट की दुनिया का एक बहुत बड़ा घटक है सर्च एंजिन यानी वह जगह जहाँ आप कोई भी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। गूगल ऐसा ही एक लोकप्रिय सर्च एंजिन है। इसकी उपादेयता इतनी अधिक बढ़ चुकी है कि अब अंग्रेजी भाषा

में तो खोज के पर्याय के रूप में शब्द ही प्रचलित हो गया है– गूगल करना। कहा जाता है कि गूगल पर अंग्रेजी में लगभग ३० अरब वेबपेज सामग्री सुलभ है। दुनिया का शायद ही कोई विषय ऐसा हो जिस पर यहाँ आपको जानकारी न मिल जाए। गूगल अनेक सर्च एंजिनों में से एक है। खुशी की बात यह है कि अब गूगल पर हिन्दी में भी बहुत सारी सामग्री उपलब्ध है लगभग डेढ़ करोड़ वेबपेज सामग्री अकेले गूगल पर हिन्दी में सुलभ है और गूगल की तरह के अनेक सर्च एंजिन, जैसे विकीपीडिया, गुरुजी डॉट कॉम, भोमियो, याहू आदि भी हिन्दी में सामग्री उपलब्ध करा रहे हैं, लिखने पढ़ने वालों के लिए यह किसी वरदान से कम नहीं है। कहना अनावश्यक है कि इस सामग्री में निरन्तर वृद्धि होती जा रही है। विकीपीडिया एक ऐसा सर्च एंजिन है जिस पर कोई भी सहयोग कर सकता है। अगर आप अपने शहर के बारे में कोई जानकारी डालना चाहें, आप ऐसा कर सकते हैं। इस तरह विकीपीडिया जन सहयोग से ज्ञानकोष के निर्माण का एक अनुपम उदाहरण है।

अपनी इस चर्चा को समेटने के लिए मैं फिर फ्रीडमैन की तरफ लौटता हूँ। फ्रीडमैन ने जो कहा कि पर्सनल कम्प्यूटर ने हमें अपने डिजिटल कण्टेण्ट का सर्जक बना दिया, उसकी चर्चा हमने पूर्व में की। आप अपने कम्प्यूटर पर जो लिखते हैं वही आपका डिजिटल कण्टेण्ट है। हमने देखा कि अब इस बात में काई दिक्कत नहीं रह गई है कि आपका यह डिजिटल कण्टेण्ट आपकी अपनी भाषा अर्थात् हिन्दी में हो।

क्रमशः ....

–डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल

❑❑❑

ओ३म्

आर्यसमाज, महर्षि दयानन्द मार्ग

११५, पिछोली, उदयपुर

वेद प्रचार सप्ताह

आमंत्रण पत्र

०९.०९.२०१२ से

१६.०९.२०१२ तक

महर्षि दयानन्द सरस्वती

प्रवचनकर्त्ता - श्री सत्येन्द्र सिंह आर्य (मेरठ)

कार्यक्रम

०९.०९.१२ एवं १६.०९.१२, रविवार – प्रातः ८ से १०.३० तक

०९.०९.१२ से १५.०९.१२ – सायं ६ से ८ बजे तक

स्थान – सत्संग सभागार, आर्यसमाज उदयपुर

निवेदक

प्रकाशचन्द्र श्रीमाली	सर्व सदस्यगण	सुरेशचन्द्र चौहान
प्रधान – ८००३०९९९७०	आर्यसमाज, उदयपुर	मंत्री – ९४६८५७८४७३

महर्षि दयानन्द का औषधि पत्र स्वास्थ्य

आधी शुद्ध आधी बेशुद्ध

हिन्दी दिवस पर विशेष

एक लड़का था,मध्य वर्ग में भी जो मध्य वर्ग होता है उसी वर्ग का। जब वह बड़ा होने लगा तो अंग्रेजी माध्यम के एक स्कूल में उसका दाखिला करवा दिया गया। स्कूल में फीस तगड़ी ली जाती थी, पर वह सांस्कृतिक मुफलिसी का शिकार था वहाँ न अंग्रेजी अच्छी पढ़ाई जाती थी न हिन्दी। लड़के में प्रतिभा थी । एक सायं जब नीम के पत्ते गिरने लगे और मन की उदासी बढ़ने लगी। उसकी कवि प्रतिभा फूट पड़ी । उसने एक छोटी सी कविता लिखीः-

कितने अच्छे हैं मेरे पेरेन्ट्स
उन्होंने दिया मुझे बर्थ
मुस्काया स्काई नाच उठी अर्थ
नाउ आई एम टेन एंड वन
अपने पेरेन्टस का प्राउड सन
वे हैं मेरे बेस्ट फ्रेण्ड
जानते हैं लेटेस्ट ट्रेण्ड
उनकी कृपा से एवरीथिंग आई गॉट
जब मैं पूरा ग्रो कर जाऊँगा, आई विल अर्न अ लॉट

अपनी कविता को कापी पर सजावटी अक्षरों में उतार कर वह सातवें आसमान की ओर उड़ चला। रातभर आधा सोता आधा जागता रहा। अगले दिन उसने अपनी अंग्रेजी शिक्षिका को अपनी कविता दिखाई। वह हँसने लगी फिर संजीदा होकर बोली बेटे तुम्हें पूरी 'पॉयम' अंग्रेजी में 'राइट' करनी चाहिए थी। शिक्षिका ने पहली पंक्ति को इस तरह सुधारा :-

'हाउ ग्रेट आर माई पेरेन्ट्स' और लड़के से कहा कि बाकी तुम देख लेना। वहाँ से निराश होकर लड़का हिन्दी शिक्षक के पास गया । वह भी हँसने लगा कि अटेम्प्ट तो अच्छा है पर तुम्हें पूरी कविता को ही हिन्दी में ही कम्पोज करना चाहिए था। हिन्दी शिक्षक ने पहली पंक्ति को इस तरह सुधाराः-

'कितने भले हैं मेरे माता पिता'

वहाँ से भी दुःखी होकर लड़का टिफिन की घन्टी के बाद ही पेट दर्द का बहाना कर घर लौट आया। अब वह अपनी कविता को कभी पूरी अंग्रेजी में तो कभी पूरी हिन्दी में लिखने की कोशिश करने लगा लेकिन सब बेकार। अंत में उसने पाया कि न उसकी अंग्रेजी इतनी अच्छी है कि वह अपनी कविता को पूरी तरह अंग्रेजी में लिख सके न उसकी हिन्दी इतनी अच्छी है कि वह उसे पूरी तरह हिन्दी में लिख सके।

थककर वह उस रात बिना खाये ही सो गया। अगले कई महीनों तक उसने कोई कविता नहीं लिखी।

जिस हिंग्लिश को बातचीत की भाषा के स्तर पर स्वीकार करने की तर्कसम्मत सी दिखती हुई वकालत श्री सुरेश कुमार,जनसत्ता कर रहे हैं उसका एक नतीजा यही होने वाला है। यह सब मेरी कल्पना नहीं है। सुरेश जी भी संजीदा होकर भविष्य की कल्पना करेंगे तो उनके हाथ भी यही लगेगा। मैं जानता हूँ कि वे भाषा के मामले में सक्षम और सुरुचि सम्पन्न व्यक्ति हैं, तभी इतनी प्राञ्जल भाषा में उन्होंने यह टिप्पणी लिखी है। वे हिंग्लिश के बढ़ते हुए असर से खुद भी चिन्तित हैं। वे बहुत साफ साफ कहते हैं। 'हाँ यह ठीक है कि हिंग्लिश की वकालत आधा सच है। बाकी आधा सच नकारात्मक ही है।' शिक्षा विशारदों के अनुसार यह सामान्यतया हिन्दी पर अधिकार, न अंग्रेजी पर अधिकार की स्थिति है। इसे शिक्षा व्यवस्था का अंग नहीं बनाया जा सकता। ऐसी हिन्दी सीखने सिखाने का आदर्श नहीं बन सकती। फिर भी उनकी मान्यता यह है कि 'जिस प्रकार समाज में प्रचलित व्यवहारों में कुछ ही अनुकरणीय होते हैं। शेष अन्य को हम बर्दाश्त करते हैं इस प्रकार हिंग्लिश को भी हम बर्दाश्त करेंगे, करना पड़ेगा, पर उसके अनुकरण को भाषा सौष्ठव की दृष्टि से सब प्रयोजनों के लिए संस्थागत आधार पर प्रोत्साहित न करना ही उचित होगा।

जाहिर है सुरेश कुमार के इरादे में कोई खोट नहीं है। वे हिन्दी के शुभचिन्तक हैं। वे उन लोगों के भी शुभचिन्तक हैं जो परिस्थितिवश हिंग्लिश का प्रयोग कर रहे हैं। इस दोहरी प्रतिबद्धता की वजह से ही वे एक क्षेत्र हिन्दी को देते हैं जहाँ कोई भी

समझौता उन्हें मंजूर नहीं है और एक क्षेत्र हिंग्लिश को जहाँ कोई भी समझौता मान्य है। अगर सुरेश कुमार इस उदाहरण का आनन्द ले सकें तो मैं कहना चाहूँगा कि यह बँटवारा इलाहबाद उच्च न्यायालय के उस फैसले की तरह है जिसे मान लेने पर विवादग्रस्त भूमि पर न मंदिर बन सकेगा न मस्जिद खड़ी की जा सकेगी। कई बार समाज न्यायालय से अधिक बुद्धिमान होता है। हिन्दी के इसी समाज का आग्रह है कि अगर बीस करोड़ लोगों की इस भाषा ने इस रपटीली राह पर चलना स्वीकार कर लिया तो अन्ततः वह खत्म हो जायेगी। उसकी गिनती क्रियोल भाषाओं में होने लगेगी जिसका मतलब यह है कि वह न इधर की रहेगी न उधर की और शायर कहेंगे कि सुनते हैं कि हिन्दी भी थी अच्छी सी एक जुबान। मुद्दा साधुभाषा व जनभाषा का नहीं है दोनों में हमेशा अन्तर रहा है। मुद्दा सिद्धान्त व व्यवहार का भी नहीं है। दोनों में फर्क जितना ज्यादा हो जीवन उतना ही प्रदूषित होता है। मुद्दा यह है, क्या यह संभव है कि शिक्षित समाज में कुछ लोग हिन्दी लिखते और बोलते रहें तथा कुछ लोग हिंग्लिश का प्रयोग करते रहें? द्वन्द्व का यह दौर पढ़े लिखों और कम या गैर पढ़े लिखों के बीच नहीं बल्कि पढ़े लिखों और पढ़े लिखों के बीच है। यही,एक ही वर्ग हिंग्लिश का जनक है। इस वर्ग की झूठी तारीफ में द्विभाषी संस्कृति नामक एक विचित्र चीज की कल्पना की गई है।

मैं नहीं जानता कि यह चिड़िया देश के किस भाग में पाई जाती है। अशोक वाजपेयी व कृष्ण कुमार जैसे विशिष्ट अपवादों को छोड़ दिया जाए, तो जो लोग मुख्यतः अंग्रेजी में काम करते हैं उनकी हिन्दी हाँफती रहती है और जो मुख्यतः हिन्दी में काम करते हैं उनकी अंग्रेजी को हिचकी आती रहती है। क्या हम उस दौर की असहाय प्रतीक्षा करते रहें जब हिन्दी द्विभाषी संस्कृति की नकली आभा से चमकने लगेगी और अन्त में खोटा सिक्का असली सिक्के को बाजार से बाहर कर देगा? सुरेश कुमार व्यावहारिक समस्याओं का हल निकालने के लिए यह व्यावहारिक सुझाव देते हैं 'अगर हम पाठ्य पुस्तकों की हिन्दी में विशिष्ठ तकनीकी शब्दावली अंग्रेजी में(रोमन लिपि का प्रयोग करते हुए) रखें और सामान्य शब्दावली(बहुप्रचलित तकनीकी शब्दों के साथ) और वाक्य रचना हिन्दी में ही रहे तो क्या हमारे प्रशिक्षुओं का ज्ञान व्यवहार की दृष्टि से अधिक कार्यसाधक न होगा। बोलें 'ग्लोबल वार्मिंग' और पढ़ें लिखें 'वैश्विक तापमान वृद्धि' तो क्या उनकी उलझन और बोझ नहीं बढ़ेंगे?' बढेंगे जरूर बढ़ेंगे, लेकिन यह बढ़ना वैसा ही होगा जैसे पहले तो किसी की टांग तोड़ दी जाए और जब डॉक्टर उसके लिए बैसाखी बनाने लगे तो शिकायत की जाए कि उससे उसकी उलझन व बोझ नहीं बढ़ेंगे? बेशक टूटे हुए पैरों को बैसाखी अच्छी लगती है, लेकिन उसका मतलब यह नहीं है कि बैसाखी का प्रचलन बढ़ाने के लिए लोगों की टांगें तोड़ना शुरू कर दिया जाए। फिर तो बाजार में बैसाखी ही बैसाखी दिखने लगेंगी। अंत में बैसाखी उद्योग के हित में यह राष्ट्रीय नीति बनाई जायेगी कि जन्म लेते ही बच्चों के दोनों पैर काट दिए जायें। जाहिर है सुरेश कुमार जैसे सुधी लोग इस दृश्य की कल्पना कर काँप उठेंगे। लेकिन हिंग्लिश को थोड़ी भी मान्यता मिल गई तो वह बीस तीस साल में ही हिन्दी को चट कर जायेगी। भाषा पहले बोली जाती है फिर लिखी जाती है। लिखे जाने पर उसके मानक रूप स्थिर होते हैं। इसी मानक रूप से भाषा का विकास होता है उसमें साहित्य व दर्शन की सृष्टि होती है। जब बोली जाने वाली भाषा आक्रामक रूप से अशुद्ध होने लगती है तब समाज में शुद्ध भाषा की रक्षा वैसे ही की जाती है, जैसे संस्कृत भाषा की रक्षा की गई है। उसके हाथ पाँव बाँधकर । इसी प्रक्रिया में संस्कृत जानने वालों की संख्या कम होती गई और अब वह पोथियों में ही मिलती है।

हिंग्लिशीकरण के बाद भी हिन्दी रहेगी क्यों नहीं रहेगी। पर कुछ किताबों तक महदूद होकर। अंग्रेजी राज में हिंग्लिश की शुरूआत नहीं हुई। जबकि इसकी गुंजाइश बहुत ज्यादा थी। यह शुरूआत आजादी के कई दशकों बाद हुई क्योंकि भारत का शासक वर्ग हिन्दी सीखने और उसका प्रयोग करने के लिए राजी नहीं था। यह दुर्दशा अन्य भारतीय भाषाओं की भी हुई। वे साधन सम्पन्न लोगों की नाजायज सन्तानें हुईं।

अगर शुरू से ही भाषा नीति व शिक्षा नीति को आमूलचूल बदलकर उनका भारतीयकरण करने का व्यवस्थित प्रयास किया गया होता तो आज हिन्दी के शिक्षित समाज में 'ग्लोबल वार्मिंग'जैसे शब्द नहीं सुने जाते। आखिर कोई तो बात होगी कि भारत के दस बड़े फिल्मी सितारों,दस बड़े खिलाड़ियों,दस बड़े उद्योगपतियों व दस बड़े मीडिया व्यक्तित्वों में आधे भी ऐसे नहीं हैं जो दस शुद्ध वाक्य लिख व बोल सकें।

यही वे डॉक्टर बन्धु हैं जो पहले आदमी की टांग तोड़ते हैं और फिर कहते हैं बैसाखी का प्रयोग करने में बुराई क्या है देखो हम भी तो बैसाखी पर चल रहे हैं।

- राजकिशोर
५३ एक्सप्रेस अपार्टमेन्ट.मयूरकुंज दिल्ली ११००९६

❑❑❑

आर.डी.गुप्त

निर्वाचन – आर्य समाज दयानन्द, गाजियाबाद के निर्वाचन दिनांक २२ जुलाई १२ को सम्पन्न हुए जिसमें पदाधिकारियों का चयन निम्नानुसार किया गया। प्रधान– श्री रामेश्वर दयाल गुप्त, मन्त्री– श्री कैलाश चन्द्र अरोडा एवं कोषाध्यक्ष– श्री ज्ञान प्रकाश जिन्दल।

वृष्टियज्ञ– आर्य समाज डोहरिया का वृष्टियज्ञ दिनांक २०.०७.१२ से २७.०७.१२ तक यज्ञ के ब्रह्मा श्री नवरत्नमल शर्मा द्वारा सम्पन्न कराया गया। श्री भूपेन्द्र सिंह जी आर्य एवं श्री लेखराज जी शर्मा द्वारा भजनोपदेश प्रस्तुत किए गये। परमात्मा की कृपा से दिनांक २१ जुलाई २०१२ को ग्राम डोहरिया में वर्षा भी अच्छी हो गई।

निर्वाचन – आर्य समाज कलकत्ता के निर्वाचन दिनांक ८ जुलाई २०१२ को निम्नानुसार सम्पन्न हुए जिसमें–

प्रधान– श्री मनीराम आर्य, मन्त्री– श्री सत्यप्रकाश जायसवाल एवं कोषाध्यक्ष– श्री मदनलाल सेठ ।

प्रतिष्ठित सदस्य– आचार्य पं. उमाकान्त उपाध्याय, श्री विश्वनाथ पोद्दार, पं. आत्मानन्द शास्त्री, पं. नचिकेता भट्टाचार्य, पं. देवनारायण तिवारी, श्री शीतल प्रसाद आर्य, श्री लक्ष्मण सिंह, श्रीमती सरोजनी शुक्ला।

–मन्त्री, सत्यप्रकाश जायसवाल, आर्य समाज कलकत्ता

वेद विज्ञान परिचय शिविर का आयोजन

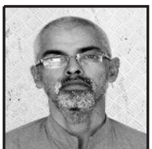

पूज्यपाद आचार्य श्री अग्निव्रत नैष्ठिक जी के संचालन में २१, २२ एवं २३ सितम्बर १२ में त्रिदिवसीय वेद विज्ञान परिचय शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इसमें आचार्य जी अपने वेद विज्ञान शोध का अब तक का व आगामी शोध की रूपरेखा का महत्वपूर्ण परिचय यथासम्भव सरल, सुबोध भाषा में करायेंगे। इस अवसर पर आचार्य धर्मबन्धु जी, स्वामी वेदानन्द जी, डॉ. जयदत्त उप्रेती, आचार्य बृजेश जी, प्रो. बसन्त मदनसुरे, श्री टी.सी. डामोर (आई.जी. पुलिस, उदयपुर), श्री आनन्द कुमार आर्य (कार्यकारी प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा) श्री सुरेशचन्द जी अग्रवाल, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री चौधरी शिवकुमार आर्य, श्री विनय आर्य, श्री अशोक आर्य सदृश गणमान्य आर्यजन भी सम्मिलित होंगे।

वेद कथा एवं यज्ञ सम्पन्न

दिनांक ६ अगस्त से १२ अगस्त २०१२ तक आर्यसमाज महर्षि दयानन्द मार्ग बीकानेर में चतुर्दिवसीय वेद कथा का आयोजन भव्यरूप में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर पूज्य स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती (पिपराली), स्वामी सत्यानन्द जी दर्शनाचार्य, श्रीमान् हरिशचन्द्र विद्यावास्पति, आचार्य शिवकुमार शास्त्री के प्रेरक प्रवचन व श्री काशीराम 'अनल' के भजनोपदेश हुए।

–महेश सोनी, मंत्री

आर्य समाज भीमगंज मंडी, कोटा जं. का त्रिदिवसीय वार्षिकोत्सव

दिनांक २४ मई २०१२ से २६ मई २०१२ तक बड़े हर्षोल्लास से मनाया गया। भजन-प्रवचन आर्य समाज के वैदिक विद्वान् पं. भरतलाल शास्त्री (हिसार) और प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं. दिनेशदत्त शर्मा (दिल्ली) के सानिध्य में सम्पन्न हुए। आर्य समाज को ४० वर्ष से विशेष योगदान देने वाले दम्पति पं. रामदेव शर्मा और उनकी पत्नी श्रीमती मधु शर्मा को शाल दुशाला श्रीफल भेंट कर सम्मानित किया गया।

–ओमदत्त गुप्ता, मंत्री

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व सोत्साह मनाया गया

दिनांक १० अगस्त से ११ अगस्त १२ तक आर्य समाज मन्दिर शान्तिनगर, सोनीपत (हरियाणा) में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व सोत्साह मनाया गया। मुख्य उद्बोधन आचार्य हरिशंकर अग्निहोत्री जी, आचार्य आर्य तपस्वी सुखदेव जी, महात्मा वेदमुनि जी द्वारा प्रदान किया गया।

– हरिचन्द स्नेही, प्रधान आर्य समाज

आचार्य आर्य तपस्वी सुखदेव प्रचारार्थ विदेश प्रवास पर

आर्य तपस्वी सुखदेव जी भारत वर्ष में लगभग अढ़ाई मास उपलब्ध नहीं रहेंगे क्योंकि वे वैदिक धर्म के प्रचारार्थ विदेश प्रधार रहे हैं। श्रद्धालु कृपया नोट करें।

ब्र. शुद्ध चैतन्य स्मृति वेदमंदिर, सायला, जिला–सुरेन्द्रनगर, गुजरात

सायला में ब्र. शुद्ध चैतन्य स्मृति वेद मंदिर के प्रबंधक, सर्वश्री गोपाल गिरधर जी वेद अनुरागी, इन्दुभाई पटेल, स्वामी आत्मानन्द जी स्मृति शेष की याद में प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन दिनांक ७ जुलाई २०१२ को किया गया। श्री खुमान सिंह जी लोकगीत गायक की मंडली मुकेश आर्य और दीपक आर्य जी ने ईश्वर स्तुति में भजन सुनाये, कु. भावना ने भी भजन सुना श्रोताओं को भाव विभोर कर दिया। संचालन स्वामी प्रवासानंद जी ने किया ।

आर्यसमाज शिकागोलैण्ड का समारोह सम्पन्न

आर्य समाज शिकागो (यू.एस.ए) का उत्सव धूमधाम से मनाया गया। उल्लेखनीय है कि इस समाज के प्रधान डॉ. सुखदेव चन्द सोनी ने एक चर्च को क्रय कर आर्य समाज में परिवर्तित किया था। आज यह आर्य समाज डॉ. सोनी जी के नेतृत्व में विश्वभर में अपनी पहचान बना चुका है। संगीत विशारद भाई नरेन्द्र वशिष्ठ पुरोहित पद के दायित्व को संभाल रहे हैं। समारोह में भारत वर्ष से स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती तथा इस न्यास के न्यासी श्री सुरेश अग्रवाल (प्रधान–आर्य प्रतिनिधि सभा गुजरात) भी समुपस्थित थे।

हलचल

'सण्डे हो या मण्डे कभी ना खाओ अण्डे'

अंडे खाने से दिल को खतरा – अंडे खाने से दिल की बीमारियों का खतरा कई गुणा तक बढ़ जाता है। कनाड़ा में हुए एक रिसर्च के मुताबिक अंडे की जर्दी यानी (पीला भाग) से शरीर में कैरोटिड प्लाक नामक तत्व बनता है। ये दिल की धमनियों को ब्लॉक कर देता है। इससे रक्त का प्रवाह भी धीमा हो जाता है। ये शोध करीब १२०० लोगों पर किया गया था। इसमें पाया गया कि कैरोटिड प्लॉक ४१ वर्ष से अधिक आयु वाले लोगों में बढ़ जाता है। लेकिन अंडे की जर्दी और धूम्रपान करने से ये तेजी से बढ़ता है।

– साभार दैनिक भास्कर

[redacted]

प्रतिस्वर

जीवन–स्पर्शी प्रकाश से प्रदीप्त यह छोटी सी सुन्दर पत्रिका मानव मात्र की मुखछवि को तेजोमय समाज के लिए द्वार द्वीप बनेगी। सूर्य समान विश्व में पत्रिका पहुँचे।

–यज्ञसेन आर्य

सत्यार्थ–सौरभ का जून २०१२ का अंक प्राप्त हुआ। इस अंक में ई.रामेश्वर दयाल गुप्त, प्रधान आर्य समाज दयानन्द नगर, गाजियाबाद ने जो पत्र गोवध बंद हो, विषय पर प्रधान मंत्री मनमोहन सिंह को लिखा है उसके समर्थन में सब आर्य समाजों को भी लिखना चाहिए और यह पत्र बतौर जानकारी अन्य पत्रिकाओं में भी छपना चाहिए। श्री रामेश्वर दयाल गुप्त का धन्यवाद। इसके अलावा पेज २२ पर एक कविता मौत जिन्दगी से बेहतर है। बहुत मार्मिक है। शव पर कीमती चादर–शॉल डालने की बजाय आधा किलो घी का पैकट डाला जाये तो शव की सद्गति होगी। कुछ नहीं तो एक किलो बढ़िया सामग्री ही ले जाओ जो अन्तिम विदाई का सर्वोत्तम उपहार होगा। पत्रिका में स्वास्थ्य रक्षा की चर्चा देते रहो। एक शंका हो रही है रानी लक्ष्मी बाई ने अंतिम समय में बालक दामोदर को किसके हवाले किया? संभव हो तो आगामी अंक में स्पष्ट कर देना। शुभकामनाओं सहित।

– देवराज 'आर्य मित्र' नई दिल्ली

सत्यार्थ संदेश पत्रिका में उल्लिखित सभी सामग्री प्रभावोत्पादक गहन चिन्तनीय, सरस, सुन्दर व आकर्षक लगी। वेद सुधा, सामंजस्य, अहंकार का पराभव, सामना सामत्वम्, यश की अमर धरोहर, अन्ध विश्वास,सत्यार्थ प्रकाश पर लिखे गये व्याख्यात्मक ग्रन्थ व अपराजय योद्धा महाराणा प्रताप आदि लेख विशेष पठनीय एवं हृदयग्राही लगे। ऐसे प्रयुक्त सामग्री से ही पत्रिका का गौरव बढ़ता है। सम्पादक होने के कारण यह श्रेय आपको जाता है। हार्दिक बधाई और धन्यवाद। पत्रिका के विस्तार की शुभकामना सहित।

–हीरालाल आर्य, शाहपुरा

जुलाई अंक मिला, बहुत आभार। सुन्दर सामग्री, अच्छा गैटअप प्रशंसनीय। २२ जुलाई २०१२– पूज्य स्वामी तत्वबोध जी की पुण्य तिथि पर सादर श्रद्धा सुमन अर्पण।

– नानक चन्द लोढिया, हल्द्वानी

सौ साल से जल रहा है एक बल्व

आम तौर पर बिजली के बल्व की उम्र एक हजार घंटे मानी जाती है लेकिन ब्रिटेन में एक बल्व पिछले १०० साल से जगमगा रहा है। ब्रितानी अखबार 'सन' में छपी एक खबर के मुताबिक २३० वोल्ट, ५५ वाट का ये डीती ओसराम बल्व जुलाई १६१२ में बना था यानी टाइटैनिक डूबने के चंद महीनों बाद। इस बल्व के मालिक ७४ वर्षीय राजर डायबाल का कहना है कि ४५ साल पहले जब वो अपनी पत्नी पैट्रिका के साथ अपने मौजूदा घर में रहने आए थे तो ये बल्व पहले से ही वहाँ लगा था और आज तक उनके आँगन को रोशन कर रहा है।

विदेशी भाषाओं में सत्यार्थ प्रकाश के अनुवाद और अनुवादक

डॉ.भवानी लाल भारतीय

कालजयी धर्म ग्रन्थों के विभिन्न भाषाओं में अनुवाद होना एक सामान्य बात है। जानकार लोग बताते हैं कि संसार की सर्वाधिक भाषाओं में बाइबिल के अनुवाद हुए हैं। हिन्दू धर्मग्रन्थों में भगवद् गीता के सर्वाधिक अनुवाद मिलते हैं। ऋषि दयानन्द का लिखा सत्यार्थ प्रकाश एक युगान्तरकारी धर्मग्रन्थ है जिसने लाखों लोगों के जीवन की दशा और दिशा को तो बदला ही उनकी सोच में क्रान्तिकारी परिवर्तन किया है। मेरी जानकारी में अब तक सत्यार्थ प्रकाश के २२ भाषाओं में अनुवाद हो चुके हैं। १३ भारतीय भाषाओं में तथा ९ विदेशी भाषाओं में। जिन विदेशी भाषाओं में सत्यार्थ प्रकाश के अनुवाद उपलब्ध हैं वे हैं-अंग्रेजी, जर्मन, फ्रैंच, डच, स्वाहिली, नेपाली, बर्मी, चीनी तथा थाई। जिन भारतीय भाषाओं में यह ग्रन्थ अनूदित हुआ है, वे हैं- संस्कृत, उर्दू, पंजाबी, सिन्धी, गुजराती, मराठी, कन्नड़, तमिल, तेलुगु, मलयालम, बंगला, असमिया तथा उड़िया। दृष्टिहीन लोगों के लिए बनी ब्रेल लिपि में भी इसका अनुवाद हो चुका है।

हम उपर्युक्त अनुवादों तथा उनके अनुवादकों के बारे में ज्ञातव्य बातें लिखते हैं- सर्वप्रथम अंग्रेजी अनुवादों को देखें-

अंग्रेजी में सर्वप्रथम अनुवाद १९०६ में डॉ.चिरंजीव भारद्वाज ने किया।

अनुवादक डॉ.चिरंजीव भारद्वाज का परिचय

पेशे से चिकित्सक डॉ.भारद्वाज (१८७४-१९१५) होश्यारपुर (पंजाब) जिले के श्याम चौरासी ग्राम के निवासी थें। इन्होंने चिकित्सा शास्त्र का उच्च अध्ययन इंग्लैण्ड में ही रहकर किया तथा एफ.आर.सी.एस.डी.पी.एच.आदि उपाधियाँ प्राप्त कीं। इंग्लैण्ड में रहते हुए उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश का अनुवाद आरम्भ किया और वहाँ रहते हुए सात समुल्लासों का अनुवाद पूरा कर डाला। १९०४ में ये स्वदेश लौटे और १९०६ में अनुवाद पूरा किया। १९०६ में यह अनुवाद यूनियन प्रिन्टिंग वर्क्स लाहौर से छपा। बाद में इसके अन्य संस्करण भी छपे जिनका विवरण इस प्रकार है-

आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त ने १९१५ में, राजपाल एण्ड सन्स ने १९२७ में, आर्य समाज मद्रास ने १९३२ में तथा सार्वदेशिक सभा ने १९७५ में। कुछ वर्ष पूर्व डी.ए.वी. प्रकाशन दिल्ली ने भी इसे प्रकाशित किया है। डॉ.भारद्वाज ने बर्मा तथा मॉरिशस में वैदिक धर्म प्रचारार्थ पर्याप्त समय व्यतीत किया था। मॉरिशस के आर्य आज भी उनके प्रचार कार्य का स्मरण करते हैं। अनुवाद का अंग्रेजी नाम लाइट ऑफ ट्रुथ था। इनके पुत्र पंडित सत्यकाम भारद्वाज ने इसे १९२४ में छपाया था।

सत्यार्थप्रकाश के दूसरे अनुवादक थे मास्टर दुर्गाप्रसाद-

मास्टर दुर्गाप्रसाद के बारे में बाद की पीढ़ी के आर्यसमाज के अनुयायियों की जानकारी नगण्य है। मूलतः मध्यप्रदेश के सागर नगर के निवासी और बाद में लाहौर में जा बसे दुर्गाप्रसाद ने अंग्रेजी में पर्याप्त साहित्य लिखा था। लाहौर में इन्होंने दयानन्द हाई स्कूल की स्थापना की और उसके मुख्याध्यापक बने। इसी नगर में इन्होंने विरजानन्द प्रेस की स्थापना की तथा दुरंगी छपाई में चारों वेद मूल छापे। इनके द्वारा लिखे लगभग पचास ग्रन्थों का परिचय मैंने स्वलिखित 'आर्य लेखक कोश' में दिया है। पहले इन्होंने सत्यार्थ प्रकाश के भिन्न-भिन्न समुल्लासों के अनुवाद पृथकशः छापे

चाइनीज

The Satyartha
The Sanska avidh
The Gokar

केन्या

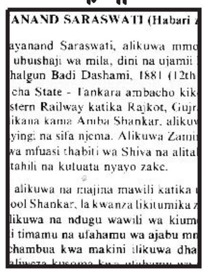

ANAND SARASWATI (Habari

ayanand Saraswati, alikuwa mmo
uhuishaji wa mila, dini na ujamii
halgun Badi Dashami, 1881 (12th
cha State - Tankara ambacho kik
stern Railway katika Rajkot, Gujr
ikana kama Amba Shankar, aliku
yingi na sifa njema. Alikuwa Zam
wa mfuasi thabiti wa Shiva na alita
tahili na kutuata nyayo zake.

alikuwa na majina mawili katika
ool Shankar, la kwanza likitumika
likuwa na ndugu wawili wa kium
i timamu na ufahamu wa ajabu m
chambua kwa makini ilikuwa dha

नेपाली

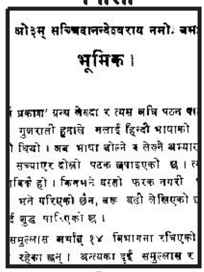

ओ३म् सच्चिदानन्देश्वराय नमो: नमः

भूमिका।

अंग्रेजी

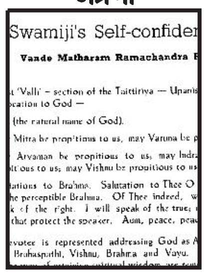

Swamiji's Self-confiden

Vande Matharam Ramachandra

'Valli' – section of the Taittiriya — Upanis
cation to God —
(the natural name of God).
Mitra be propitious to us, may Varuna be
Aryaman be propitious to us; may Indra
itious to us; may Vishnu be propitious to us
lations to Brahma. Salutation to Thee O
he perceptible Brahma. Of Thee indeed, w
k of the right. I will speak of the true;
that protect the speaker. Aum, peace, peac
evotee is represented addressing God as A
Brahaspathi, Vishnu, Brahma and Vayu.

स्वाहिली

AUM
SATYARTH PRAKASH
Mwangaza wa Kweli
SURA I
MAELEZO YA AUM

jina zuri sana la Mungu; k
um. lionyeshe sifa zake nyingi.
nwengu. Agni: Mjuzi wa yote,
Mungu: u ina maana ya Hi
ri, Vayu, Mwenye Enzi zote,
za Mungu, na m inayonye

तथा १६०८ में सम्पूर्ण ग्रन्थ को प्रकाशित किया। इस पर उनका परिचयात्मक वाक्य था- **An English translation of the satyarth prakash. literally: Expose of Right Sense of vedic Religion of Maharshi Swami Dayadanand Saraswati: The Luthor of India being a guide to vedic Hormmencuties.** विरजानन्द प्रेस लाहौर से यह १६०८ में प्रथम बार छपा। जन ज्ञान प्रकाशन दिल्ली (पंडित भारतेन्दु द्वारा संचालित) ने इसे १६७० में तथा १६७२ में पुनः प्रकाशित किया।

फ्रैंच

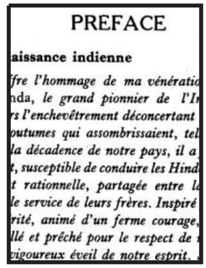
PREFACE

aissance indienne

ffre l'hommage de ma vénératio
nda, le grand pionnier de l'In
rs l'enchevêtrement déconcertant
outumes qui assombrissaient, tel
la décadence de notre pays, il a
t, susceptible de conduire les Hind
t rationnelle, partagée entre l
le service de leurs frères. Inspiré
rité, animé d'un ferme courage,
llé et prêché pour le respect de
vigoureux éveil de notre esprit.

सत्यार्थ प्रकाश का परिष्कृत अंग्रेजी में अनुवाद : पंडित गंगाप्रसाद उपाध्याय

आर्य समाज के अंग्रेजी लेखकों में शीर्ष स्थान पाने वाले पंडित गंगाप्रसाद उपाध्याय ने १६४६ में यह अनुवाद किया और इसे अपने प्रकाशन संस्थान कला प्रेस इलाहाबाद से प्रकाशित किया। परिष्कृत भाषा तथा मूल के अभिप्राय को विशुद्ध रीति से व्यक्त करने वाले इस अनुवाद को अंग्रेजी का सर्वश्रेष्ठ अनुवाद कहा जा सकता है। कालान्तर में इसे डॉ. सत्यप्रकाश ने स्वस्थापित 'रत्नकुमारी शोध संस्थान इलाहबाद' से पुनः प्रकाशित किया। एक अन्य संस्करण आर्य प्रकाशन दिल्ली ने भी प्रकाशित किया है।

जर्मन

OM

Wir beugen uns wiederho
eine wahre Verkörperung
Bewußtheit und des Sege

Einleitung

ese erste Ausgabe dieses Bu
röffentlicht wurde und vorh
beim Lesen und Schreiben, w
rati war. Aus diesem Grun
liche Kenntnis dieser Sprach
lieses Buch geschrieben ist.

फ्रैंच अनुवाद- मदाम लुई माटेन पैरिस की रहने वाली थीं। डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार की प्रेरणा से उन्होंने फ्रैंच में अनुवाद किया। सर्वप्रथम १६४० में यह बेल्जियम से प्रकाशित हुआ। तत्पश्चात् सार्वदेशिक सभा ने इसे भारत में प्रकाशित किया। पंडित वासुदेव विष्णुदपाल ने इसे मॉरिशस में छपाया।

बर्मी

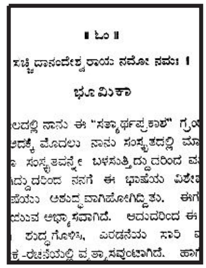
॥ ಓಂ ॥

ಸಚ್ಚಿದಾನಂದೇಶ್ವರಾಯ ನಮೋ ನಮಃ ।

ಭೂಮಿಕಾ

ಲದಲ್ಲಿ ನಾನು ಈ "ಸತ್ಯಾರ್ಥಪ್ರಕಾಶ" ಗ್ರಂ
ಅದಕ್ಕೆ ಮೊದಲು ನಾನು ಸಂಸ್ಕೃತದಲ್ಲಿ ಮಾ
ಸಂಸ್ಕೃತವನ್ನೇ ಬಳಸುತ್ತಿದ್ದುದರಿಂದ ಮ
ದ್ದುದರಿಂದ ನನಗೆ ಈ ಭಾಷೆಯ ವಿಶೇ
ಯು ಅಶುದ್ಧವಾಗಿಹೋಗಿದ್ದಿತು. ಈಗ
ರುವ ಅಭ್ಯಾಸವಾಗಿದೆ. ಆದುದರಿಂದ ಈ
ಶುದ್ಧಗೊಳಿಸಿ, ಎರಡನೆಯ ಸಾರಿ
ಕ್ಯ-ರಚನೆಯಲ್ಲಿ ವ್ಯತ್ಯಾಸವುಂಟಾಗಿದೆ. ಹಾಗ

जर्मन अनुवादक दौलतराम देव-मूलतः पाकिस्तान के मियांवाली जिले के निवासी थे। इन्होंने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के आदेश से १० समुल्लास पर्यन्त जर्मन में अनुवाद किया। यह जर्मनी के लिपजिग नगर में १६३० में छपा। बाद में इसका कोई संस्करण नहीं छपा।

बर्मी अनुवादक -भिक्षु कित्तिमा-(१६०२-१६२७) बर्मा (म्यांमार) के अराकान प्रान्त के निवासी डॉ. कित्तिमा बौद्ध भिक्षु थें। इन्होंने गुरुकुल कांगड़ी में रहकर संस्कृत अध्ययन किया था। पंडित गंगाप्रसाद उपाध्याय तथा आर्य प्रतिनिधि सभा बर्मा के मंत्री डॉ. ओम् प्रकाश के अनुरोध से इन्होंने बर्मी भाषा में जो अनुवाद किया वह रंगून से १६५६ में प्रकाशित हुआ ।

डच

ओ३म्

Ere aan God, die een verpersoonlijking is van waarachtigheid, kennis en zegen.

INLEIDING [1]

it is een tweede, verbeterde druk. Toen ik
atyārthaprakāśa [2] schreef, bezat ik geen gron
ennis van het Hindi, daar ik steeds in mijn st
devoeringen en conversaties het Sanskṛita gebr
n mijn moedertaal Gujarātī was. Nu heb ik e
indī leren spreken en schrijven volgens de regels
e grammatica en is mijn kennis, in vergelijking
roeger, veel beter. Natuurlijk zijn er daardoor e
vijzigingen gekomen wat woorden en zinsbouw be
at was noodzakelijk omdat anders de verbetering
e taal niet mogelijk is. Ik heb evenwel
vijzigingen aangebracht in de betekenis van
oorden. Wel heb ik de fouten van de eerste
erwijderd of verbeterd.

चीनी अनुवाद उपाध्याय जी की प्रेरणा से डॉ. चाओ ने किया। थाई भाषा में अनुवाद बैंकॉक से छपा। अफ्रीका की स्वाहिली भाषा (लिपि रोमन) में अनुवाद दक्षिण अफ्रीका के आर्यसमाज ने करवाया। हाल में हालैण्ड की डच भाषा में सत्यार्थ प्रकाश का अनुवाद छपा है। (अनुवादक- पं. एस. बीरे) ध्यान रहे कि हॉलैण्ड के एम्सटर्डम, राटरडम तथा देनहाक (राजधानी) में विशाल स्तर पर आर्य समाज कार्यरत हैं।

-३/५-शंकर कॉलोनी,श्रीगंगानगर

❑❑❑

न्यास द्वारा समस्त संस्कारों हेतु समुचित व्यवस्था

जीवन में उदात्त नैतिक मूल्य स्वयमेव स्थापित नहीं होते, भागीरथ प्रयत्न करना होता है। भारतीय मनीषा ने इस हेतु १६ संस्कारों का विधान किया है। जो प्रत्येक गृहस्थ को करवाने चाहिए। कई सज्जनों को लगता है कि यह कठिन तथा व्यय-साध्य कार्य है। हमारा निवेदन है कि ऐसा कुछ नहीं है। संस्कार चित्त-प्रसाद-अभिवृद्धि का हेतु है। आप केवल दूरभाष पर अपनी अभिलाषा बतावें। न्यास के पुरोहित पंडित नवनीत आर्य सारा कार्य, स्वतः व्यवस्था कर सुन्दरता से सम्पन्न करायेंगे।

दूरभाष : ०२६४-२४१७६६४, चलभाष ०६३१४५३५३७६

कृपया न्यास की वेबसाईट : www.satyarthprakashnyas.org पर अवश्य देखें

पत्रिका से सम्बन्धित किसी प्रकार की जानकारी/शिकायत के लिये निम्न चलभाष पर सम्पर्क करें।

०६३१४५३५३७६

प्रत्येक माह की 20 तारीख तक भी पत्रिका न मिलने पर कृपया इसी चलभाष पर सम्पर्क करें।

Vedas Beckon and Mantras Make Life Meaningful

By Brigadier Chitranjan Sawant, VSM

Human beings wish to live a meaningful life. Let us live a life where you and I enjoy good health and unadulterated happiness. But the life today is full of sound and fury signifying nothing. Men and women run from pillar to post but at the end of the day the net result is nil. May be because we have chosen a wrong path and we did not have a selfless soul around to guide the lost souls to the goal. ..The Supreme Being or God is the Ultimate Guide and souls seeking the correct path are Human Beings or other embodied souls in different forms.

VEDAS GUIDE ONE AND ALL

The Supreme Being or Ishwar revealed the Ved mantras to the Rishis right at the beginning of the Creation of this Universe or Brahmand for guidance of human beings to live a meaningful pragmatic life enjoying sound health and happiness par excellence. This state of perfect happiness is called ANAND. The state of perfect happiness or Anand is achievable when a soul attains Moksha or liberation from the bondage of birth, death, and rebirth and so on.

The Vedas are four in number: Rig-Ved, Yajur-ved, Sam-ved and Atharva-ved. The mantras therein guide human beings on every aspect of life. The human beings recite them, meditate on them and imbibe the teachings in day-to-day life. The Vedic process of acquiring knowledge sees a soul through mundane life to the stage of achieving Moksha when a soul attains freedom from the cycle of birth and death or transmigration of soul from one life to another.

SATYARTHA PRAKASH

The Vedas and the knowledge disseminated through the mantras had unfortunately become the exclusive preserve of a few among the Brahmins during the dark ages. This led to degeneration in all walks of life among all sections of the society. Women and non-Brahmins were the worst sufferers and were deprived of the benefits of the divine knowledge of the Vedas for many centuries. The entire Vedic society was weakened from top to toe. Many invaders of different countries and religions preyed on weaker sections of the Vedic social order.

Came the Defender of the Faith in the Nineteenth century India. A young Sanyasi, a hermit who lived detached from the mundane allurements and declined to be tied down by social order and obeyed NONE but the Almighty ISHWAR and His Commandments called the VEDAS, rose on the firmament like SUN dispelling darkness. The vibrant Vedic society saw a ray of hope and Mankind was the beneficiary. Swami Dayanand Saraswati through his erudition, single minded devotion to reviving the moribund social order and restoring the learning-teaching process of the Vedic Thought, rose to be called a Maharishi. His treatise, **SATYARTHA PRAKASH,** became the panacea of all ills. Today in the 21st century, if an individual living in any part of the globe has any problem nagging him or her physically, mentally or spiritually, he or she or both are advised to study the Satyartha Prakash's relevant chapter to restore the peace of mind.

Love-life is lovely but does give lovers a headache off and on. The steps leading to a wedding and joys and sorrows of the marital life are dealt with deftly in this Magnum Opus of Maharishi Dayanand Saraswati. A reader has the choice of many language versions of the book but the original text in Hindi and the English translation are the most popular one. If a reader finds a chapter rather difficult, he or she is advised to skip it and begin a new with chapter

eleven that deals with eradication of superstitions. The story form of narration attracts the reader and he or she may find it difficult to put down the book until the last page is read.

ARYA SAMAJ

The Arya Samaj is a movement of the masses that was initially popular in the North India, especially the Punjab, UP, Rajputana and so on. Now, of course, it is spreading its influence elsewhere too, the western countries in particular. Men and women of the American and European countries are attracted to the Arya Samaj as it is a Reformation Movement.

The citizens of the Western India in general and Gujarat and Maharashtra in particular appealed to Maharishi Dayanand Saraswati to found an organization to carry on the good work of Reformation of the Hindu society and save it from sinking into oblivion. Of course, the Rishivar was concerned about the welfare of entire Mankind in general and the Hindu Samaj in particular and, therefore, did not wish the Arya Samaj to emerge as a sectarian society like the Brahmo Samaj of Bengal. Rishivar was successful in this endeavor of his.

The relevance of the Arya Samaj today is greater than ever before on the national and social firmament. The Anti-National Elements working hard to destabilize Bharat today are increasing their efforts by leaps and bounds. They have to be checked and stopped in their tracks. Some large political parties have failed to tackle the Islamists terrorists because they do not wish to alienate their Muslim vote bank. How disturbing a factor it is that Muslims are considered to be closer to terrorists than to their own motherland, Bharat. Here is the ground for the Arya Samaj to work and reform the anti-national elements and motivate them to merge into the main stream of social and political life. During the freedom struggle against the British rulers, the Arya Samaj had played a leading role. Now the young men and women who wish to strengthen the country may think of joining the Arya Samaj and make it a Nationalistic Force to reckon with.

Right from Day One of its founding on 10 April 1975 in Mumbai, the Arya Samaj has been promoting and sustaining Nationalist Forces. It is time Arya Samaj came to the forefront to enlist brave young men to fight against terrorists by weaning away the youth from them and merging them into the main stream of life of Bharat.

May we appeal to the Hindu youths of today to learn the national language, Hindi and use it in daily parlance and business transactions. Arya Samaj should help our new members to learn and practice Hindi. A strong nation has its own language and literature. An undue reliance on a foreign language for our conversation and business transaction is bound to lower us in our self-esteem and also in the estimation of other nations. Naturally our place in the comity of nations will be much lower than what it should be.

Arya Samaj keeps superstitions at arm's length. In chapters two and three of the Satyartha Prakash where Maharishi talks about education of children, he is specific about disabusing their minds of superstitious beliefs like the ghosts, djinns, and she-devils and so on. It is during the impressionable age that a child's mind has to be influenced the Vedic way and children of both the sexes have to be encouraged to influence their class mates into not believing in the existence of such super natural entities that do not exist. Right education of children at the right age has been emphasised by Maharishi Dayanand Saraswati. They devote their time and attention to receiving education and later disseminating Vedic knowledge among one and all.

Vedas beckon you. Come one; come all. Please learn the Mantras, meditate on them and imbibe the teachings for the rest of your life, your children's life and lives of children's children.

❑❑❑

श्री मोतीलाल आर्य
आबूरोड़

श्री मोतीलाल आर्य ने वैदिक संस्कार एवं महर्षि दयानन्द के प्रति अगाध निष्ठा विरासत में प्राप्त की है। आपके पिताश्री जेठमल आर्य जहाँ राजनीति में सक्रिय रहे, वहीं महिलाओं में शिक्षा के प्रसार के लिए समर्पित रहे ।

पुत्र वही है जो पिता का अनुव्रती हो । इस वेदाज्ञा को जीवन में धारण कर मोतीलाल जी ने स्वामी शारदानंद जी के सहयोग से विद्यालय का विस्तार कर आधुनिक गुरुकुल की सोच लेकर दयानन्द विद्यापीठ की स्थापना की है ।

न्यास-कार्यों में सहयोग देने में श्री आर्य सदैव तत्पर रहते हैं । न्यासी के रूप में ऐसे ही साथियों का उत्साह हमारा संबल बन जाता है । प्रभु विद्यापीठ के आपके स्वप्न को शीघ्र साकार करें, यही कामना है ।

श्री राजकिशोर मोदी एक निष्ठावान आर्य पुरुष हैं। भीलवाड़ा में अभ्रक के व्यवसाय को आपने अपनाया। आर्य समाज भीलवाड़ा में अनेक दायित्वपूर्ण पदों को आपने सँभाला। आप जिला आर्य सभा भीलवाड़ा के प्रधान भी रहे। न्यास के साथ न्यासी के रूप में आप पर्याप्त समय से जुड़े हुए हैं। न्यास की पत्रिका 'सत्यार्थ-सौरभ' से विशेष रूप से प्रभावित हो, आप इसकी सदस्यता हेतु प्रबल अभियान चलाने के पक्षधर हैं। ईश्वर आपकी मनोकामना पूर्ण करे, ऐसी प्रार्थना है।

श्री राजकिशोर मोदी
भीलवाड़ा

Title Verification - RAJHIN16158/20/1/2012-TC

ओ३म्

यह ओंकार शब्द परमेश्वर का सर्वोत्तम नाम है। सब वेदादि शास्त्रों में परमेश्वर का प्रधान और निज नाम 'ओ३म्' को कहा है, अन्य सब गौणिक नाम हैं।

सत्यार्थ प्रकाश से

महर्षि दयानन्द सरस्वती

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर से प्रकाशित, सम्पादक–अशोक आर्य